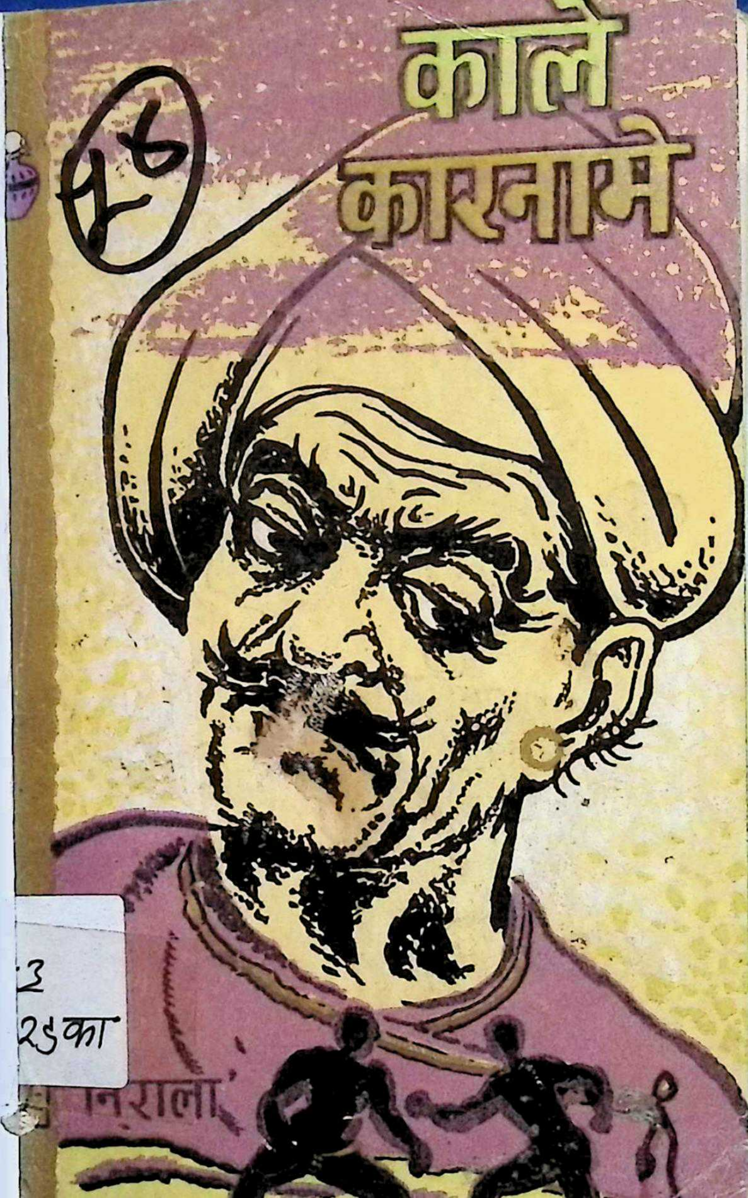
२४

काले कार-नामे


काले
कारनामे
निराला

'काले कारनामे' में श्री निराला ने ज़मींदारों की करतूतों का पर्दाफ़ाश किया है। इस उपन्यास में उन्होंने ग्राम्य-जीवन का विशद चित्रण उपस्थित किया है। आपसी घात-प्रतिघात का ख़ाका उभर कर सामने आया है।

'निराला' का नाम हिन्दी-साहित्य में सूर्य की भाँति प्रदीप्त है। उनकी अमर लेखनी का इस उपन्यास में निखार हुआ है—स्वस्थ और मुहावरेदार भाषा इस उपन्यास की विशेषता है।

प्रचारक पॉकेट बुक्स सं०—९

काले कारनामे

निराला

हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय

9—KALE KARNAME—NIRALA : NOVEL

प्रथम संस्करण
१९६०

1/-

प्रकाशक : हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय, वाराणसी—१
मुद्रक : विद्यामन्दिर प्रेस (प्राइवेट) लि॰, वाराणसी—१
चित्रकार : कांजिलाल

१

सावन का महीना आँख पर तरी बरसा रहा है। खेत लहालोट हैं, हरे-भरे, ज्वार, अरहर, उड़द, सन, मक्का और धान लहरा रहे हैं। आम, जामुन के दूर तक फैले हुए बाग़ीचे फल दे चुके हैं, इस समय विश्राम की साँस ले रहे हैं। चिड़ियों के पर भींगे हुए हैं। फड़का कर पानी झाड़ लेती हैं और मधुर-मधुर चहकती हुई, इस पेड़ से उस पेड़ पर उड़ जाती हैं; नीचे टिड्डे जैसे कीड़ों पर नज़र रखती हुई बुलबुल, गलार, पिड़की, रुकमिन, सतभैये, कोयल, पपीहा, कबूतर और बरसात की बगले की ज़ात वाली अनेक प्रकार की चिड़ियाँ, तालाब के किनारे के ऊँचे पीपल और इमली के पेड़ पर बसेरा लिए हुए। ताल पर सिंघाड़े की बेल फैलती हुई। लड़के अखाड़े कूदते हुए। औरतें काम-काज से घर और बाहर आती जाती हुईं। गाँव ८

चहल-पहल। हिंडोले पड़े हुए। लड़कियाँ झूलती हुईं। कजली, सावन, बारहमासी गाती हुईं। मर्द रात को रोज़ होते हुए आल्हे की कड़ियाँ गाते कन्धे पर लट्ठ रखे तम्बाकू-ठोंकते हुए आते-जाते हुए। गलियारे में पानी भरा हुआ। मेड़ के ऊपर से लोगों की निकली हुई पगडंडी, वह भी पानी बरस जाने से बिछलहर। कुएँ पर पनिहारिनों का जमघट।

जमींदार रामराखन के पक्के मकान से खेत, बाग़ और पेड़ आदि के दृश्य दिखते हैं। गाँव के उत्तरी निकास पर खासा-अच्छा पक्का मकान। घर में लोगों की खासी-अच्छी संख्या। कहते हैं, इस मकान में ब्याह करते साधारण परिवार भी घबराता है। जो औरत रोटी करने के लिए चौके में जाती है, उसको दिन भर लग जाता है। जो पिसान पीसती हैं उनको रोज़ पांच पसेरी से भी ज्यादा पीसना पड़ता है। जिनकी पानी भरने की बारी आती है उनको एक-एक वक़्त पचीसों घड़े पानी खींचना पड़ता है। जिनके हवाले गोबर उठाने और गाय-भैंस दुहने का काम रहता है, उनको भी दुह कर और कण्डा पाथ कर आते-आते दुपहर हो जाती है। दो नौकर कुट्टी काटने और चारा पानी करने से फ़ुरसत नहीं पाते। लड़के चरवाहे बाग़ों में ढोर ले जाने वाले अलग हैं। घर भर गजी-गाढ़े से रहते हैं। मगर गाँव में इज्ज़त है। सबसे बड़े जमींदार हैं।

मनोहर पड़ोस के एक गाँव का रहने वाला विद्यार्थी है। भरा अच्छा बदन, गठा हुआ। इस जमींदार घराने से उस की

रिश्तेदारी है। जमींदार साहब को उसकी फूफी व्याही हुई हैं। अपने गाँव राजपुर से वह जमींदार के गाँव सरायन रोज़ शाम के वक्त ज़ोर करने के लिये पहलवान रामसिंह के अखाड़े जाता है। वहीं अहीरों से तीन पसेरी का दूध तै कर लिया है; ज़ोर करने के वाद शक्कर मिला कर सेर डेढ़ सेर पी लेता है और शाम की वियारी उसी रिश्तेदारी में करके सो जाता है। चार बजे उठ कर गाँव चला आता है और कुछ पढ़ कर स्नान-भोजन करके पास के संस्कृत पाठशाले चला जाता है। आचार्य कक्षा के दूसरे साल का विद्यार्थी है।

मनोहर के पिता वम्वई में एक सेठ के यहाँ नौकर हैं। साधारण अच्छी आमदनी है। घर में खेती-वारी होती है, बैल हैं, गाय-भैंसें हैं, गाड़ी है, और स्नेहशीला महिलाएँ हैं। गाँव के लोग इनको भलेमानुस कहते हैं।

आज अखाड़े जाते हुए पहलवान रामसिंह के पड़ोसी पटियैत से चार आँखें हुईं। शीलवान मनोहर को उन्होंने चंग पर चढ़ाया। कहा, ज़ोर कराने जा रहे हो!

मनोहर ने कोई जवाब न दिया। वरसात का कीचड़ बचा कर ऊँची पगडंडी से निकलने को हुआ कि पड़ोसी ने खखार कर कहा, यह हमारा मकान है, गलियारा भी हमारा है, गाँव में जो शोहरत है वह कही, हाँ, वदन जैसा गठीला है और रेख-उठान

उम्र, हम को विश्वास है, इस ठाकुर को ज़ोर करा देते होंगे।

मनोहर फिर भी सब पी गया। लजीले डग आगे रखने को हुआ कि पड़ोसी ने फिर आवाज़ कसी—अच्छे भलेमानुस हो! आदमी तो आदमी मकान उठाए लिये जा रहे हो! अरे हम ज़मींदार के भी मान्य हैं, जवाब दे जाओ, नहीं तो हम उन्हीं से समझेंगे। मनोहर ने कहा, हम तो ज़ोर करने आते हैं, आप की बात सच होती तो इन्हीं को हमारे गाँव जाना होता। पड़ोसी ने कहा, हम को मालूम है, तुम्हारे गाँव में छाया अखाड़ा नहीं है, इसलिये यहाँ तक पैंज भरते हो। हमारा नाम है लीलाराम।

मनोहर सन्न हो गया। कुछ समझ न सका। पैर वढ़ाये गया। पड़ोसी कुछ दूर हो गया। आवाज़ दी, तो फिर तुम को अपने ही घर समझ गए न, (एक बुरी मुद्रा दिखाते हुए) हक़ीक़त समझ में आ जायगी, हम पीठ नहीं लगवाते।

मनोहर को आश्चर्य हुआ। मगर समझ कर भी तरह दे गया। कुछ दिल धड़का, टेढ़ी खीर सीधी नहीं हुई। चुपचाप अखाड़े पहुँच कर लँगोटा बांधा और नाली में दड़ करने लगा। सौ डेढ़ सौ दड़ें कीं कि उस्ताद जी नहा कर आ गये। लालटेन जला कर अखाड़े के छप्पर में बँधी रस्सी के साथ बाँध दी गई। चौदह-पन्द्रह-साल वाले लड़के अखाड़ा गोड़ चुके थे, छप्पर की थूनिया पकड़े हुए बैठक कर रहे थे। दो-तीन

लड़के उसी गाँव के, उन से कुछ बड़े, मगर मनोहर से उन्नीस, ज़ोर करने के लिए आ गये ।

उस्ताद ने लँगोटा बाँधा। पहले गाँव के बड़े लड़कों को लड़ाया। छोटे लड़के एक दूसरे से अखाड़े के किनारे-किनारे लड़ते रहे। अखीर में उस्ताद ने मनोहर को बुलाया। मनोहर तगड़ा है। लड़ता भी अच्छा है। बम्बई जाता है तो बड़े पहलवान से ज़ोर करता है। कई दाँव रवां हैं। उस्ताद सम्हले रहते हैं। मगर ज़ोर वे मनोहर के जैसे दो-तीन को करा सकते हैं। दस्ती, उतार, लोंकान, पट, ढाक, कलाजंग, घिस्से आदि दांव चले और कटे। ताक़त में भी रामसिंह बीस थे। मनोहर को ज़ोर कराकर हरे होने लगे।

ठंडे हो कर लोगों ने अखाड़ा विदा किया। मनोहर दुकान से आधा पाव शक्कर लेकर अहीर के घर गया। दुपट्टे में शक्कर रख कर दूसरे लोटे में दूध छान लिया और वहीं बैठे-बैठे पी गया; फिर रोज़ की तरह अहीर से पानी मँगवा कर दोनों लोटे धो कर दे दिये और जमींदार की हवेली के सामने पीपल के तले वाले चबूतरे पर बैठ कर पुरवैया के झोंके लेता रहा। अब तक रात एक पहर हो आई थी।

मनोहर को यहाँ कुश्ती के लिए आते अभी बहुत दिन नहीं हुए। माजरा यह है कि वह बम्बई में पिता के पास रह रहा था। संस्कृत वहीं पढ़ता था। मगर खाने-पीने का आराम

रहने पर भी बम्बई का पानी उस को उतना अच्छा नहीं लगा। घर वाले साल छः महीने के लिए बम्बई रह आते थे, मगर दिल घर पर ही लगा रहता था। मनोहर का गाँव ऐसी जगह है, जहाँ से कस्बे की संस्कृत पाठशाला नज़दीक है। घर में रहने का भी सुभीता है, इसलिये उसके पिता ने और घर वालों ने उसका घर रहना ही अच्छा समझा। रामसिंह से उस की मुलकात यों हुई कि निर्वाह के लिये रामसिंह कपड़े की दूकान करते थे; कस्बे के बाज़ार गाड़ी पर लाद कर कपड़े ले गये थे। गाँव के जमींदार के लड़के मनराखन ने कुश्ती के शौक़ीन मनोहर से दूर से रामसिंह को दिखाते हुए कहा, "अपने यहाँ के यह सबसे अच्छे पहलवान हैं, ज़ोर करना चाहो तो इन से बातचीत कर लो, फिर हम भी अच्छी तरह दाँव-पेंच सिखाने के लिये कह देंगे। हमारे रिश्तेदार होते हैं।"

मनोहर सीधे स्वभाव का रेख-उठान युवक, रामसिंह के पास मुस्कराता हुआ गया और ज़ोर करने की बातचीत छेड़ी। सुन कर रामसिंह देखते रहे और तोल कर कहा, अच्छी बात है आया करो। इसके बाद मनराखन एकान्त में मिला और अपनी जमींदारी का राज़ कह कर जैसे अपनी रक्षणशीलता रामसिंह को दी। रामसिंह ने मुस्करा कर राज़ लेते हुए कहा अच्छी बात है, मगर हमारे गांव का हिसाब है।

मनराखन ने कहा, आप लोगों का हिसाब ठाकुरों के सिवा दूसरे जमींदार क्या लेंगे ! देख लिया जायगा। असामी मोटा है। जमींदार की निगाह न रही तो किसी रोज़ सर हो सकता है। यों, सर किये रहिये।

रामसिंह का राज़ गाँव में एक पड़ोसी जमींदार के यहाँ था, मगर गाँव भर के छोटे जमींदारों का राज़ मनोहर के रिश्तेदारों के यहाँ रहता था। सरकारी मालगुज़ारी इन्हीं की सब से ज़्यादा थी।

मनोहर के आने पर पहले पहल किसी ने कोई छेड़-छाड़ नहीं की, जैसे कुछ होता हुआ भी न हो रहा हो। दो एक रोज बाद बातों ही बातों रामसिंह ने अपने राज़ का इज़हार किया। दूसरे जमींदार का माथा ठनका। उसने कहा, तुम हमराज़ हो, किसी को जो तुम्हारा रिश्तेदार नहीं, अगर लो तो हम से पूँछकर, क्योंकि ऐसा ही सरकार और जमींदार का क़ायदा है। जिस गाँव के यह हैं, वहाँ का जमींदार ज़िम्मेवार होगा। रात आठ नौ बजे के बाद जब यह आप के यहाँ से चले जाते हैं तब कहाँ जाते हैं, क्या करते हैं, किसी को नहीं मालूम। अगर कोई चोरी डाका हो जाय तो क्या तुम इसके ज़िम्मेवार होगे ?

रामसिंह ने कहा, यहाँ वह जो तुमसे भी बड़े जमींदार हैं, इनके रिश्तेदार हैं। वहीं रात को रहते हैं। सवेरे गाँव

जाते हैं। हम को इतना ही मालूम है। इनके गाँव के जमींदार हमारे रिश्तेदार हैं। राज हमारा ठाकुरों का। सर चढ़ कर बातचीत की तो हजारों घोड़े मुतवावेंगे।

इस तरह बातचीत बढ़ते-बढ़ते बढ़ गयी और गाँव भर में तरह-तरह का रंग चढ़ने और उतरने लगा। मनोहर के रिश्तेदार ने गंभीर हो कर सुन लिया। लोगों की सलाह उन को पसन्द आई। रामसिंह चने हो कर भाड़ कैसे फोड़ सकते हैं, उन के जमींदार की यह शिकायत उन को सही मालूम हुई। उन्होंने मतलब बैठा लिया कि किस रास्ते गुज़रा जाय, गाँव के मामले में रामसिंह की मदद दूसरे गाँव से कैसे पहुँच सकती है।

मनोहर चबूतरे पर बैठा हवा ले रहा था। हवेली की चौपाल से चबूतरा देख पड़ता है। जमींदार मनोहर के फूफा साहब उठ कर चले। मनोहर के पास आ कर बैठे। पहले मन लेते रहे, बहलाते रहे। यह मालूम होने पर कि मनोहर सच्चा है और रामसिंह को उस्ताद की निगाह से देखता है, उन्होंने कहा, बच्चा! देहात का हिसाब-किताब तुमको कम मालूम है। ज़मीं का जाल बिछा है। जो जमीं तुम्हारी नहीं उस पर पैर रखने का भी हक़ तुम को नहीं, अगर उस का ज़मींदार किसी सूरत से तुम्हारा रखवाला नहीं। सरकार को एक जवाब जमींदारी के अन्दर के किसी कारनामे के लिये देना

पड़ता है। तुम जिस गाँव से आये हो, तुम्हारे साथ उस गाँव का राज़ भी आता है। उस गाँव के जमींदार का राज़ इस गाँव का जमींदार रियाया की हैसियत से न लेगा। जो तुम्हारे पहलवान हैं वह तुम्हारे नौकर नहीं, तुम खुद उनके यहाँ लड़ने आते हो यानी उनके मातहत हो। ऐसा होने पर जमींदार के साथ का उन का रिश्ता जाता रहता है। बर्ताव में बल पड़ता है। जमींदार से वह एक रैयत की हैसियत से नहीं पेश आ सकते। रैयत के तौर पर वह तुम को पेश करते हैं। लेकिन जमींदार तुम को नहीं ले सकता, क्योंकि तुम्हारे साथ हमारा हिसाब है, और हम जमींदार की तौहीन होने से हर तरह बचाएँगे। ग़र्ज़ यह कि हमारे रिश्तेदार की हैसियत से तुम वहाँ जा सकते हो, मगर यहाँ के जमींदार के आदमी बन कर। कल अपने जमींदार से कह कर आना कि हम उन के आदमी हैं हमारा नाम ले कर, तब तुम्हारी समझ में बात आ जायगी। इस गाँव में हमारे आदमी को अपने आदमी क़रार नहीं दे सकते और जमींदार के आदमी को नहीं लड़ायेंगे तो क्या गुज़रेगी यह उनके आगे आयेगा।

फिर हँसते हुए दूसरी बातचीत करने लगे। मनोहर ने सुना, उन्होंने मन ही मन कहा, ठाकुर बहक गये।

कुछ देर बाद जमींदार साहब उठ कर चले गये। मनोहर विचार में पड़ गया। उस को नया विषय मिला, नया रास्ता

जिस से वह कभी नहीं गुज़रा। उस को गाँव के ज़मींदार की बातें याद आईं, बाद को बाज़ार में मिलने का दृश्य एक बार फिर आँखों पर घूम गया, हक़ीक़त बड़ी भयावनी लगने लगी। हाथ-पैर ढीले हो चले। उसने कभी नहीं सोचा, ज़मींदार की ज़ात ब्रह्म-राक्षस से बढ़ कर है जिससे पीछा कभी नहीं छूटता। क्षण भर में उसके मन की दशा बदल गई। पूरा-पूरा ज्ञान इस सम्बन्ध का पा लेने के लिए उकताने लगा। इतनी भाप भर गई कि दूसरे ही दिन बम्बई रवाना हो जाने की सोचने लगा।

कुछ देर बाद एक आदमी बुलाने के लिये आया। मनोहर खाना खाने चला। घर के ग़ैर लोगों को बाहर निकाल कर उसकी फूफी आज खुद थाली परोस कर बैठीं।

मनोहर हाथ-पैर धो कर, कुल्ले कर के थाली पर बैठा। उस की फूफी ने मुस्करा कर कहा, क्यों रे, तू पागल है! तुझ को यहाँ लड़ना था तो हमसे कहता? रामसिंह आँखें क्या चढ़ाने लगा! ले-दे कर एक जोड़ी बैल, एक गाड़ी और एक दो-गाँठ कपड़ा! जैसा कहा, कल वैसा कर। अभी तक हम लोग चुप थे। लड़का है, खिलवाड़ है। कल सही हाल मालूम हो जायगा। इसके बाद, जब यहाँ से जायगा, गाँव के डाँड़ तक हमारा राज, उधर उन का।

मनोहर को सारी रात बेचैनी रही। पड़ा तारे गिनता रहा। बहुत दूर तक अक़्ल चलती नहीं थी, फिर भी ज़मीन-आसमान

के क़ुलाबे मिलाता रहा। जब ठंढी हवा लगती थी, सोचता था, दुनिया में लोग एक दूसरे से इस तरह क्यों नहीं मिलते कि छोटे-बड़े का भेद-भाव भूल जाय, एक दूसरे के गले-लगे दोस्त हों, गर्दन नापने वाले दुश्मन नहीं। माजरा जैसा रंग पकड़ रहा है, आखिर तक किसी की जान से गुज़र कर रहेगा।

लेटे कुछ देर हुई कि एक नौकर आया। उसने कहा, गाँव में किसी चिड़िया को यह हाल न मालूम हो। जमींदार से कह आना दूसरे गाँव का हमारा राज हमारे रिश्तेदार के यहाँ है। यहाँ मालिक के छोटे भाई आपसे मिलेंगे। जैसा-जैसा कहें करते जाइयेगा। यह कह-कर वह चला गया।

मनोहर फिर करवटें बदलने लगा। पुरवाई के झोंके कभी-कभी झाड़ियों की खुशबू से लदे मस्त करते हुए आने लगे। आल्हा की धुन सुन पड़ने लगी। साथ ढोलक बज रही थी। कुछ देर बाद मनोहर अपनी उधेड़-बुन में आ गया। जैसे भूल-भुलैयों में पड़ गया हो, निकलने का रास्ता न पा रहा हो। जी उकताने लगा। आँखों पर रात पार हो गई। पौ फटने की सूरत नज़र आई। वह उठ कर गाँव को चला।

★

२

जब घर आया तब भी चक्कियाँ चल रही थीं। ढोर नहीं छूटे थे। पनहारिनें पानी को नहीं निकलीं थीं। गाँव के बाहर एकाध स्यार तब भी चक्कर काट रहे थे। घरों के दरवाज़े नहीं खुले थे। मनोहर रात भर का जगा था। किसी को आवाज़ नहीं दी। चौपाल की खाली चारपाई डाल कर लेट गया। देखते-देखते आँख लग गई। आज पाठशाला जाने की उतावली न थी। घर की तरफ़ से न निश्चय था, न अनिश्चय। बम्बई जायगा या घर रहेगा, फ़ैसला न कर सका था।

घर के लोगों ने उठ कर उसको लेटा हुआ देखा, तो जगाया नहीं। उसकी अम्मा को कुछ झझक हुई, मगर वह भी जगने तक मुँह दबाए रहीं। दिन का काम, पीसना, भैंस लगाना, कण्डे पाथना, पानी भरना, रोटी करना आदि होता

रहा। कभी-कभी मनोहर के सोते रहने पर फ़ब्तियाँ चलती रहीं। जब जगा तब दुपहर थी। नींद के आ जाने से बदन हल्का हो गया। जंगल गया और दातोन के लिये नीम का एक गोजाह ले कर लौटा। फिर डोल, लोटा, डोर, और धोती ले कर पक्के कुएँ को चला। नहा धो कर घर लौटा, मकान के भीतर देवता को प्रणाम करने गया, कुछ देर बैठा माला जपता रहा, फिर चन्दन लगाए हुए लौटा और चौके को गया। उसकी माता ने थाली परोस दी और बैठी मक्खियाँ उड़ाती रही। जब आधा भोजन कर चुका, एक गिलास पानी पी लिया, तब उसकी माता ने पूछा, "क्यों भैया, आज आते ही सो गए? पाठशाला नहीं गये।"

मनोहर ने जवाब दिया, "कुछ ऐसा ही पेंच पड़ गया है। तुमसे कहूँगा। बड़ी बात नहीं, एक बतंगड़ है।"

माँ मुँह देखती रहीं। आग्रह आँख से फूट कर निकल रहा था। मनोहर ने भोजन समाप्त किया। हाथ-मुँह धोए, कुल्ले किए। माँ ताक पर थीं, इसलिए घर की खिड़की से गोंड़े की तरफ गया, इशारे से माँ को बुला कर।

उधर चारों तरफ़ से चारदीवार बीच में तीन-चार नीम के पेड़ हैं, छाया किए हुए। दो एक चारपाइयाँ पड़ी हैं। औरतों के विश्राम की जगह है। बाहर से कोई देख नहीं सकता। जैसे छोटा नीम का एक बाग़ीचा हो। एक तरफ एक

कुआँ है। पानी खारा होने के कारण चौका-टहल और नहाने-धोने के ही काम में लाया जाता है। खुली जगह होने के कारण पुरवाई के विरामपूर्ण झोंके आ रहे हैं। नीमों पर चिड़ियों की चहक दिन भर सुन पड़ती है।

मनोहर पड़ी हुई चारपाई पर बैठ गया। माँ भी एक किनारे आ कर बैठीं। सशंकित दृष्टि से माँ को देखता हुआ कुल हाल मनोहर धीरे-धीरे बयान कर गया। माँ ने कहा, बाहर की बात है, घर के पुरखे यहाँ है नहीं, इसलिये ननदोई जी का कहना ही करना चाहिए।

मनोहर ने कहा, अम्मा! बात यह बड़ी पेचीदी जान पड़ती है। हम किसी अधिकार के आदमी हों, हमारे रक्षण के कोई नियम हों, उनका पालन होना जरूरी है, इस बात से इस का विरोध जाहिर होता है। ऐसी ही बात बम्बई में गुज़री, जिसके कारण हम लोगों को यहाँ चला आना पड़ा। किराए के जिस मकान में रहिए, किराया देते रहने पर भी जैसे अपना कोई स्वत्व न हो। पिता जी जहाँ नौकर हैं, वहाँ माह-माह काम करने और तनख्वाह लेने के अलावा उन की व्यक्तिगत कोई ज़िम्मेवारी नहीं। स्वत्वाधिकारी सेठ भी है जिनके वे नौकर हैं। किराये के मकान में स्वत्वाधिकार ज़मींदार का है जिस का वह मकान है। हमारा समाज इस तरह स्वत्वहीन गुलामों का एक समाज हो रहा है, और यह ब्राह्मणत्व! इस

पर भी तरह-तरह से नीचा देखने की नौबत आती है। अब इतर जन सर उठाने लगे हैं। हमारी अवमानना समाज की उन्नति का पहला साधन हो रही है। दूसरे हमारा ब्राह्मणत्व हमारी एक छोटी-सी पहिचान के सिवा, एक छोटे से दायरे में आ जाने के सिवा कोई ताकत नहीं रखता—दूसरे प्रान्तों में हम शूद्रों से भी बदतर समझे जाते हैं। आप को मालूम हो कि मकान-मालिक के इतर विचार के कारण हमने सर उठाया था, जिससे नीचा देखना पड़ा। समाज में उस की ब्राह्मण के लिए हुई मान्यता उसके पुरोहित के हक़ में गई थी। हम जैसे ब्राह्मण हीन रहे हों। जाति की आँखों में जातिगत अभिमान नहीं रहा। इस तरह आदमी लगा कर दूसरे का स्वत्व खींचना आदमी का अपमान है जिससे हम को सर उठाना पड़ा। तुमको भी कितना नीचा दिखाया जब उसने अपनी ज़ुबान से अपनी ब्राह्मणी लगा कर कहा, हमारे घर में पूजा-दान के समय इन्हीं का मान है, तुम्हारा नहीं; तुम कौन हो कौन नहीं, हम को क्या ज्ञान? उस मकान में रह कर बेइज़्ज़ती सर किये रहने से बाज़ आये। मकान छोड़ कर चले आये। यहाँ वही माजरा है। अब अगर फिर किसी कारण से हमको गाँव छोड़ कर बम्बई जाना पड़ा तो हम कौन-सा मुँह ले कर जायेंगे।

माता ने सुन लिया। देखते-देखते उनके हृदय की सिहनी

जैसे ऊपर को छलांग मारी, उन का सर तमाम आदमियों के ऊपर उठ गया। बड़े ही स्नेह तथा गम्भीरता के स्वर से उन्होंने कहा, बेटा मुझ को विश्वास है कि तू मेरे दूध की लाज रखेगा और इन कामों की तह तक पहुँच कर इन की ज़ंजीर तोड़ने के काम आएगा। अभी तो कच्चा बच्चा है। इन तमाम लांछनों को चुपचाप सर उठाए हुए तैयार होता कि एक वक्त तू इन की जड़ें काटे। दूसरा कोई चारा नहीं। हम एक मुद्दत से यह कसाले झेल रहे हैं। माँ से बेटे को वरासत में जो बातें मिलती हैं, वे हमारे क़ौम की गर्दन झुका देने वाली हैं। मुसलमानी ज़माने से जो अपमान होते आये हैं, बेटे, तू अभी बच्चा है, तुझ से कहने-लायक नहीं, सिर्फ़ तैयार होता जा कि माँ के सपूत का जवाब दे—वे बातें दुधारी तलवार हैं, मत समझ की तेरी माँ, तेरी बहन एक धर्म के रिश्ता के सिवा और कुछ रखती हैं। मजबूरी के सिवा मरदों के हाथों उनके और भी जो अपमान होते हैं वे सैकड़ों बिच्छुओं के डंक मारने से ज़्यादा जलन वाले और जहरीले हैं। मरदों की आँख के नीचे उनके अपमान हुए हैं और मरदों के हाथ-पैर नहीं चले। हम पीढ़ियाँ लिख रखते हैं। हमारी माँ का कहना था सौ पीढ़ियाँ बीत चुकी हैं; यह तैंतालीसवीं पीढ़ी के बाद। हम उस को भगवान को अर्पण कर देते हैं और बाक़ी पीढ़ियाँ चलती हुई बांधे रहती हैं। यही कामना दिन-रात रहती है कि नारियों

का अपमान है, हे भगवान्, बदला चुकाओ। सिर्फ़ बदले की आग धधकती है।

मनोहर चुपचाप सुनता रहा। कहा, माँ मैं तुम्हारा योग्य-पुत्र होने की कोशिश करूँगा।

कह कर वह उठ खड़ा हुआ और बाहर चला गया।

*

२

गाँव में चारों तरफ हरियाली ही हरियाली है। अरहर और ज्वार के पेड़ इतने बड़े हो गये हैं कि उनसे तमाम खेत हरे-भरे नजर आते हैं। धान भी दूसरों की हरियाली से होड़ कर रहे हैं। सन की तो बात ही नहीं। पौधे मुट्ठी भर रोज बढ़ते हैं। सबसे ज्यादा ऊँचे वही दिख रहे हैं। बागों में घास भी घुटना छूने लगी है। गाँव के लड़कों की डोर फूट के खेतों में लगी है जिनकी ककड़ियाँ उतर कर आने लगी हैं। क्षण भर में चारा-पानी हो जाता है। सींचने की कहीं चिन्ता नहीं। मकान छाए-छोपे जा चुके हैं। किसान आराम की साँस ले रहे हैं। बड़े-बड़े आदमियों की चौपालों में दो-दो, चार-चार, छः-छः आदमी बैठते हैं। बाजरे की खेती कौन-कौन करेंगे इसकी बात-चीत हो रही है। जमींदार का मकान चापलूसी का अड्डा

है। मनराखन खासे अच्छे पलंग पर क़ालीन बिछाए बैठा हुआ है, सटक पी रहा है। कुछ फ़ासले पर साधारण-सी नंगी चारपाई पर सिपाही बैठा है, सरहाने के सहारे लट्ठ रखे हुए। कुछ किसान जो साधारण जातियों के हैं, चौपाल के चबूतरे पर छप्पर के नीचे उकड़ूँ बैठे हुए हैं। आशा है, मालिक पी चुकें तो वे लोग भी चिलम पिएँ। चापलूसी में एक-दूसरे से तेज़ पड़ रहे हैं। बड़े मालिक बैठके में आराम कर रहे हैं। मनोहर दरवाज़े की नीम की छाँह से गुज़रता हुआ चौपाल पहुँचा। जिस चारपाई पर सिपाही बैठा था उस पर बैठने को हुआ। ज़मींदार का सिपाही सरहाने की तरफ़ सरक गया। बैठने के साथ मनोहर का कलेजा भी जैसे बैठ गया। मनराखन ने उस को सिर्फ़ ऊँचे से जैसे एक दफ़े देख लिया और धीरे से सटक गुड़गुड़ा दी। सिपाही को हिम्मत हुई वह सरहाने की तरफ़ सरक गया, मुस्कराया और मनोहर को देख कर कहा, आओ बैठो। रोज-रोज का अभिवादन गाँव के ज़मींदारी प्रकरण में नहीं भी रहता।

मनोहर ने देखा, हिम्मत बँध कर भी ढीली पड़ जाती है। ऐसा बंधान है जो उखाड़ा नहीं उखड़ता। आज इतनी ही देर के आवेश में उस की निगाह में वह ताक़त आ गई है जो हर एक की सूरत का जिन देख लेती है और समझ जाती है कि यह आदमी जान-बूझ कर कमज़ोरी का शिकार बना हुआ है। यह

उस समय की बात है जब देश में राजनीतिक संस्थाएँ प्रबल नहीं थीं। सरकार के यहाँ रियाया की तरफ़ से जवाब देने वाले जमींदार ही थे।

सिपाही ने मुस्करा कर पूछा, आज दुपहर-दुपहर कैसे आए! ऐसे वक्त, गाँव में कभी तुम्हारी चिड़िया भी नहीं दिखी।

मनोहर ने कहा, पाठशाला नहीं गए। मनराखन से कुछ काम है। सिपाही ने लोक लिया। काम की बात करते हो तो हम से पूछो। हम इन के पिता से करेंगे। खेल-कूद वाली बात हो तो इनसे करो। पहलवानी यह करते नहीं, जरूरत पड़ेगी तो हाँ, दो-चार पहलवान ला देंगे। यह इन का पानी चढ़ा रहने के सिवा उतर न जायगा।

कह कर सिपाही हाथ में अपनी लाठी उठा कर उसकी बँधी राखी खोलने लगा कि फिर सुधारकर बाँध दे।

लागन बोल मनोहर को चुभा। उसने कहा—विजय सिंह, हम तुम्हारे पास नहीं आए और चारपाई में पायते ही बैठे हैं और अभी तक वह जमाना नहीं आया कि हम लोगों से तुम हाथ बाँधे हुए न पेश आओ।

विजयसिंह भी नौजवान है। तन्दुरुस्ती वैसी अच्छी नहीं। जमींदार का सिपाही, लत लुच्चई की पड़ी हुई। जवानी में जैसे चूसा आम हो। मनोहर की तन्दुरुस्ती से

खार खाता था। आज मौक़े पर पा कर बुखार उतारा। मनराखन अमीरज़ादे की तरह सटक पीता हुआ कृपा की दृष्टि से रह-रह कर मनोहर को देख लेता था।

पहले जो हिम्मत पस्त हुई थी बग़ावत में बदल गई, मगर सँभाल कर उसने सिपाही से लाठी ले ली। ढीली पकड़ी लाठी विजय के हाथ से निकल गई। उस को अपने क्रोध के कारण डर हुआ। साथ ही चीख़ निकली—अरे अपमान कर डाला!

इन्द्रमन लोध उन बैठे आदमियों में था। बिना कहे उस से नहीं रहा गया। उसने कहा,—मालिक तुम तो हवा से बिगड़ते हो! इन्द्रमन को जलन थी। सिपाही ने उन की बहन की अस्मत बिगाड़ी थी। रोटी पड़ने के डर से उसने किसी से कहा नहीं। ज़हर के घूँट पी कर रह गया। आज एक मौका हाथ आया।

विजयसिंह इसको ताड़े बिना न रहा। मगर तरह दे कर बात बनाई। कहा, सावन का अँधा हो रहा है? हरियाली झूमती है! लाठी जमींदार की, यह देख, हाथ खाली है, कह कर अपने हाथ दिखाए और हुक्म दिया, झपट कर छीँन लाठी।

इन्द्रमन की कुल नसें ढीली पड़ गईं। दूसरी सवारी गठी देखी। मनोहर से कहा, रखिए महाराज, लाठी उधर, जिनकी है।

इन के लिए, जब यह अपने आये हैं, एक लौंडा काफ़ी है, तुम्हारी इन की हाथी और मेढ़े की जोड़ है।

मनोहर लाठी लिये ही रहा। मनराखन इन्द्रमन की बात पर जगे। आँखें तरेर कर कहा, तुम्हारे लिये ठाकुर ही हैं, क़ायदे के खिलाफ़ कैसे बोलते हो?

इन्द्रमन ने कहा, और जो यह पाँयते बैठे हुये हैं, यह कौन हैं? इनको तो विजयसिंह ने बेबात-की-बात में ले-दे डाला। मनराखन उठ कर खड़े हो गये। कहा, सूद बिना जूतों के सीधा न होगा। कह कर ताव में आ कर लतखोरे तक लपक कर जो जूता उठाया वह इन्द्रमन ही का था।

इन्द्रमन ने कहा, मालिक, ए, राम के हाथ ऐसा फ़ैसला है। यह जूता हमारा है।

मनोहर उठ कर खड़ा हो गया। मनराखन से कहा, चलाओगे तो पहले हमीं को लगेगा, इस को डाल दो।

मनराखन ने जूता डाल दिया।

मनोहर ने कहा, यह लो अपनी लाठी। मनराखन ने लाठी ले ली। मनोहर कहता गया, गाँव के ज़मींदार का राज आप लोगों के यहाँ रहा। बाहर का हमारे रिश्तेदारों के यहाँ। उस रोज़ की बाज़ार वाली बात न भूलो। तुम्हारी अगर वहाँ तक बिसात हो तो अपनी कर गुज़रना। हमारा वहाँ का हिसाब यहाँ के ज़मींदार के साथ नहीं रहा।

इन के लिए, जब यह अपने आये हैं, एक लौंडा काफ़ी है, तुम्हारी इन की हाथी और मेढ़े की जोड़ है।

मनोहर लाठी लिये ही रहा। मनराखन इन्द्रमन की बात पर जगे। आँखें तरेर कर कहा, तुम्हारे लिये ठाकुर ही हैं, क़ायदे के खिलाफ़ कैसे बोलते हो?

इन्द्रमन ने कहा, और जो यह पाँयते बैठे हुये हैं, यह कौन हैं? इनको तो विजयसिंह ने बेबात-की-बात में ले-दे डाला। मनराखन उठ कर खड़े हो गये। कहा, सूद बिना जूतों के सीधा न होगा। कह कर ताव में आ कर लतखोरे तक लपक कर जो जूता उठाया वह इन्द्रमन ही का था।

इन्द्रमन ने कहा, मालिक, ए, राम के हाथ ऐसा फ़ैसला है। यह जूता हमारा है।

मनोहर उठ कर खड़ा हो गया। मनराखन से कहा, चलाओगे तो पहले हमीं को लगेगा, इस को डाल दो।

मनराखन ने जूता डाल दिया।

मनोहर ने कहा, यह लो अपनी लाठी। मनराखन ने लाठी ले ली। मनोहर कहता गया, गाँव के ज़मींदार का राज़ आप लोगों के यहाँ रहा। बाहर का हमारे रिश्तेदारों के यहाँ। उस रोज़ की बाज़ार वाली बात न भूलो। तुम्हारी अगर वहाँ तक बिसात हो तो अपनी कर गुज़रना। हमारा वहाँ का हिसाब यहाँ के ज़मींदार के साथ नहीं रहा।

उस वीर के सामने मनराखन की हिम्मत पस्त हो गई। जैसे किसी ने नज़र बाँध दी। मनोहर उतर कर सीधे घर चला।

बड़ा बुरा रवैया है भैया, ठहर जाओ, हम लोग भी चलते हैं, कहते हुए किसान भी अपने-अपने जूते पहन कर चौपाल छोड़ कर चल दिये। क्षण भर में जैसे समाँ बदल गया। मनराखन और विजयसिंह के मुँह पर मक्खियों ने कई चक्कर मारे।

*

उस वीर के सामने मनराखन की हिम्मत पस्त हो गई। जैसे किसी ने नज़र बाँध दी। मनोहर उतर कर सीधे घर चला।

बड़ा बुरा रवैया है भैया, ठहर जाओ, हम लोग भी चलते हैं, कहते हुए किसान भी अपने-अपने जूते पहन कर चौपाल छोड़ कर चल दिये। क्षण भर में जैसे समाँ बदल गया। मनराखन और विजयसिंह के मुँह पर मक्खियों ने कई चक्कर मारे।

*

४

मनोहर की नसों में तनाव आ गया था, परन्तु भगवान के भीतर वाले कमरे में बैठ अपने को शान्त कर लिया, और समय से पहले तीसरे पहर के ढलते-ढलते अपना लँगोटा-जाँघिया ले कर अपनी फूफी के घर के लिये रवाना हो गया। कुछ गर्मी आँख में थी, वह उसके चरित्र और स्वास्थ्य के कारण भी, वह सर दबाये हुये भरसक निगाह नीचे से निकाल रहा था। चलते हुए भीटों को बाएँ छोड़ा। नाला मिला जिसका पानी वह चुका था। उससे निकल लोमड़ी दूसरी झाड़ी की ओर भगी जाती दिखी। देखा, गर्मी के हरे-भरे जवासों के पौधे पानी के पड़ने पर झुलस चुकें थे। उन के बीच से हरी घास ने सर उठाया था। कुछ आगे बढ़ा, तो कमर तक बढ़ी भंजूर से एक चौगड़ा लोमड़ी के घुसते ही

निकल कर भागा और कूदता हुआ बग़ल की दूसरी झाड़ी में जा छिपा। मनोहर कदम बढ़ाता गया। कुछ आगे उस के फूफा का एक वाग़ मिला। उस गाँव में उन के दो-ढाई-सौ बीघे वाग़ात है। यह वाग़ भरा है। फिर भी रोएँ और बबूल के पेड़ अधिक हैं। गाँव की ज़मींदारी से हर-तीसरे साल हज़ारों के खदरौ पेड़ उस के फूफा जमींदार साहब बेचते हैं, जिनमें सौ पचास रुपये के किसानों के भी पेड़ पड़ जाते हैं। गाँव के किनारे का पक्का ताल और संकटेश्वर महादेव का शिवाला मिला। यह भी उसके फूफा लोगों की कृतियाँ हैं।

आगे गाँव आया। गलियारे से होते हुए मनोहर अपने फूफा की हवेली की तरफ़ चला। पहले ही रामसिंह के मुहल्ले वाली राह छोड़ दी थी। घर पहुँच कर फूफी, फूफा, फूफा के भाई और उनकी स्त्री आदि गुरुजनों के पैर छुए। फिर दरवाज़े की वड़ी चौपाल में आ कर चारपाई डाल कर बैठा। उसके फूफा के छोटे भाई रामशंकर हैं। गाँव का कुल हाल इसने उनसे कहा। राज़ चला देने के इरादे से वह उस को ले कर एक काछी के यहाँ गये जो उनका किसान है। रामशंकर जी ने मनोहर से कहा, यहाँ जितने हमारे किसान हैं, सब हमीं-हम हैं। तुम यही समझो, यही तुम्हारे रिश्तेदार और जमींदार हैं।

मनोहर पीता गया।

रामशंकर ने आवाज़ दी। काछिन बैलों को सानी दे रही थी, हाथ में खली और भूसा लपेटे बाहर निकल आई।

रामशंकर जी ने उसके गुप्त अंग की ओर उँगली उठा कर कहा, यह तुम्हारी फूफी हैं और ज़मींदारिन, इनके सरपरस्त हैं सरकार, कहो हाँ।

मनोहर ने कहा, हाँ। मगर सिमिट कर रह गया।

रामशंकर जी ने दूसरा दृश्य जो उन का असली है दिखाया। कहा, काछिन भउजी, वही आज फिर दे जाओ। यह तुम्हारे भतीजे हैं, इन का कुछ आदर-स्वागत करना है।

काछिन ने कहा, ऐ, अभी तो बतियाँ हैं। जब बढ़ेगी तब देंगे। करेले की बेल तो उजाड़ दी गई। पहले की लगाई थी। कुछ मिर्चे होंगे और कुछ ककड़ी की बतियाँ। कोंहड़ा भी अब नहीं रहा, और इस साल हमने कुछ लगाया नहीं।

रामशंकर ने कहा, मसालेदार ककड़ी की जैसी तरकारी दूसरी नहीं होती, वही दे जाना।

मनोहर ने देखा, यह इनका असली रूप है। कुछ कहा नहीं, पीछे लगा उनके साथ चला गया। रास्ते में उन्होंने कहा, यह राज़ है। अब तुम हमा` आदमी हो। रामसिंह के यहाँ खबर भेज दी जायगी। वह हाथ जोड़ कर पहले पालागन करेंगे, तुम आशीर्वाद दोगे, फिर वह तुमको लड़ायेंगे। अपना उस्ताद-वाला राज़ तुम पर रखेंगे। जब लौट कर आओगे तब रामसिंह का राज़ हमारे राज़ में रहेगा। यह बर्ताव है। इसके बिना चलन नहीं चलता। ज़मींदार राजा है। उस का हिसाब पहले।

सरकार के यहाँ उस का कहना। वह नेकमाश को बदमाश क़रार दे सकता है। सरकार उसकी बात मानेगी। बदमाश की निगरानी वह अपने ज़िम्मे ले सकता है। सरकार को उस पर विश्वास है। सरकार से समझौता उसी का होता है, इसलिये मुख्यतः तुम्हारे सर दो हैं, सरकार और ज़मींदार। इसको कभी न भूलो। यह लकड़ी हाथ से गई कि दुनिया में कहीं भी थाह न मिलेगी। अब आओ, अपना काम देखो।

★

५

रामसिंह बैठे थे। पक्के गोले से कस्बे को गाड़ी ले जाते हुये बरसात में और सहूलियत थी। देहात के लोग घोड़ों पर सामान लाद कर आते थे, गाड़ियाँ बन्द रहती थीं। लिहाज़ा माल बाज़ार में कम पहुँचता था। रामसिंह गाड़ी ले जाते थे, माल अधिक बिकता था। आजकल लालोलाल हैं। खोए की बर्फ़ियाँ बनवा ली हैं, जलपान होता है और ठंडाई में पच्चीस बादाम और पड़ने लगे हैं। घी आधा पाव और खाने लगे हैं। सबसे बड़ी सहूलियत यह हुई कि मनोहर-जैसा शागिर्द! क्या चढ़े फिरने का घोड़ा मिला है। गाँव में कई जगह गरदन उठा कर गाल बजा चुके हैं। इसी का पानी चढ़ा है। लोग किस-किस मनोवृत्ति के होते हैं, इस का फ़ैसला बड़े-बड़े दार्शनिक नहीं कर पाये। एक पहलू से उस की अच्छाई साबित होती है तो दूसरे

से बुराई । जिस हद तक रामसिंह को भला आदमी कह सकते हैं, उसी तक बुरा भी । गर्ज कथा है । रूह निकालना पाठक या दर्शक का काम है। आखीर तक एक हासिल होगा ही । अगर किसी गुमराह को समझ की कमी के कारण कुछ का कुछ सूझ जाय तो वह एक उपन्यास का ही प्रकरण होगा जैसा कि होता जा रहा है।

ठंढाई के चढ़ते हरे नशे में रामसिंह आँखें खोल-मूँद रहे थे कि ज़मींदार का सिपाही लट्ठ का बँधा गूला ज़मीन पर दे-मार कर रामसिंह के साधारण ज़मींदार को साथ लिये बोला, देखिये ठाकुर साहब, राज ज़मींदार का, भतीजा ज़मींदार का, आपकी मातहत (रामसिंह के ज़मींदार को इशारे से बताते हुये) आ रहा है, लड़ाइयेगा, भला-बुरा जो कहना हो, आपकी मार्फ़त कहिएगा । लड़का है, जैसा उन का, वैसा ही आप का । चोट न लगे, ख्याल रखिये । सलाम।

सिपाही चला गया । रामसिंह ने फिर एक बार आँखें खोलीं और मूँदीं । उनके ज़मींदार ने ललकार कर पूछा, ज़्यादा चढ़ गई क्या ?

रामसिंह ने लापरवाही से फिर आँखें खोलीं और मूँदीं, और तख्त की एक बग़ल थपकी मार कर बताते हुए कहा, आओ, बैठ जाओ ।

ज़मींदार यमुना प्रसाद बैठ गये। बड़े ज़मींदार की झेंप उतारने के लिये कहा, ये शान हैं।

रामसिंह ने भी झेंप उतारी, कहा, कहो तो हम भी जवाब भेज दें।

छोटे ज़मींदार के बाज़ी हाथ आई। कहा, बस हमारे दरवाज़े चले चलो, बात हम यहाँ न लेंगे, नहीं, कहो; यह ज़मींदार की चौपाल है।

रामसिंह की फिर घिग्घी बँधी। दब कर मंजूर कर लिया। सोचा, यहाँ से वहाँ तक चल कर व्यर्थ मिहनत करनी है। हम मानेंगे तो यह जी न छोड़ेगा।

जम कर ज़मींदार ने कहा, कहो, सिपाही तो हमारे हैं नहीं, दो सौ बीघे के पट्टीदार हैं। मगर गुल खिलेगा। कुछ हमारी भी नज़र ?

रामसिंह कुछ और बैठे, यह ज़मींदार महाशय भी ब्राह्मण थे। रूढ़ि ऐसी कि घूम-फिर-कर उसी पर आना था। सोचा, वह भी कौन, काम आये, न आये दूर का रिश्ता, फिर भी ठाकुर हैं, पानी गहरे का आया तो देख लिया जायगा, ज़िले का भी राजसी ठाट हमारा ही है। बोले, क्या हम इनके घर इनको बुलाने गए ?

ज़मींदार ने कहा, यह तो हम पूछेंगे, यह तौर ज़मींदाराना

है, अपने ढंग से चलो, जैसे रिपोर्ट कर रहे हो। यही तो बिगाड़ की बुनियाद है।

रामसिंह ने कांख कर कहा, अब और तो हमसे नहीं उतारा जाता।

ज़मींदार ने कहा, तुम अपनी तरफ़ से कैसे दूसरे आदमी को बिना ज़मींदार की सलाह रात के वक्त लड़ने के लिये बुलाओगे ?

रामसिंह ने कहा, जब इतनी-सी बात तुम्हारी समझ में नहीं आती तब हम और क्या समझावें ? अगर इससे काम चल जाय तो अच्छी बात, नहीं तो जैसे गाँव दूसरे ज़मींदार का राज़ लिया है, वैसे ही यह लो (हाथ उठा कर खाली मुट्ठी खोलते हुये) यह भी वैसा ही राज़ है।

ज़मींदार ने कहा, तुम किसी ज़मींदार का राज़ यों नहीं दे सकते। यह राज़ जितैला है। अगर ऐसा ही करना है तो उस ज़मींदार को बुला लाओ। तुमसे अदा करते नहीं बनता।

रामसिंह तश में आ गये। कहा, अच्छा तो जाओ।

ज़मींदार भी गर्म पड़ा। पूछा, जगह किस की है ?

रामसिंह को जवाब देते पहाड़ जान पड़ा। खुद उठ कर चलने को हुए।

ज़मींदार ने कहा, हमारी बैठक ही से जा रहे हो न ?

रामसिंह को ताव आ गया। ज़मींदार को पकड़ कर उठा

लिया, और पास ही के उनके मकान के पास ला कर चौपाल के पास पड़ी चारपाई पर डाल दिया और कहा, अब तो हो न अपनी चारपाई पर !

ज़मींदार को बहुत ही बुरा लगा कि पूछता ही जा रहा है, चड्ढी ही गाँठे हुए है। रुख फेर कर कहा, इस का जवाब ही मिलेगा।

रामसिंह नशे में थे ही, ठपाक से आल्हा की लड़ियाँ गाने लगे—

जिनकी माता ना हरजाई, उनकी बार-बार बलि जाय।
जिनकी माता कायर जन्मे, उनको ेते रात सिराय।
जनम हुआ है छत्री घर तो ज्वानी जूझे खेत अघाय।
जनम हुआ है कायर घर तो बैठे घर अमरौती खाय।

मनोहर समय पर ज़ोर करने के लिये ग़या। उसको मालूम हुआ, अखाड़ा नहीं लगेगा। वह ैट आया। मन्दिर के चबूतरे पर कसरत करके दूध पी कर आराम करने लगा। दस-ग्यारह बजे बियारी के वक्त तक ज़मींदार से बातचीत होती रही। उस की ज़बानी यह मालूम करके कि अखाड़ा नहीं लगा, ज़मींदार चौंके। उनको यह हाल मिल चुका था कि बाज़ार में मनराखन की मार्फ़त मनोहर की रामसिंह से भेंट हुई थी। उन्होंने कमर से पच्चीस रुपये निकाल कर मनोहर को दिये और कहा, सबेरे रेल से तुम अपने बाप के

पास चले जाओ, मकान में हम खबर भिजवा देंगे, देख-रेख किये रहेंगे, यह मामला तूल पकड़ेगा। मनोहर ने मंजूर कर लिया। कहा, किसी कारण मेरी कहीं की ग़ैरहाज़िरी किसी को खटके तो भी आप समझा दीजियेगा, कोई चिन्ता न करें, मैं अम्मा की बात भी पूरी करने के प्रयत्न में हूँ।

ज़मींदार ने इसका सम्बन्ध भी अपने अनुकूल लगाया।

☆

६

रामसिंह के पास कोई आदमी न था। वह मील भर के फ़ासले के गाँव राजपुर पैदल चले गये। आल्हे की कड़ी खत्म होने के बाद उन का जी डरा कि कहीं नीचा न देख जाना पड़े। घर में कह गये थे कि अखाड़ा नहीं लगेगा।

गाँव में पूछने पर मालूम हुआ, मनराखन तीतर को दीमक चुगवा रहे हैं। पूछते-पूछते वह बाग़ों के उस पार वाले किनारे की वाड़ियों में मिलते हुए दीमक के ठिकाने पर गये। मनराखन से बातचीत हुई। ज़मींदार की आदत जैसी, मनराखन वंदगी-सलाम के बाद खामोश रहा। रामसिंह ने ठकुराई चाल से प्रश्न किया, कहो, मनोहर के क्या हाल हैं?

मनराखन ने खानदानी मित्रता के नाते जवाब दियां, वह तो गुण्डा जान पड़ता है।

रामसिंह—हमको कुछ खास बातें मनोहर की बतला दो।

मनराखन—उस्ताद हमारा ऐसे ही आदमियों से काम रहता है। टेढ़ी लकड़ी ही हम सीधी किया करते हैं। राज़ हम और कुछ नहीं देते। क्योंकि गाँव के भलेमानुस हैं, टेढ़े पड़े, घुमाये-फिराये गये, फिर सीधे हो गये। ज़मींदार की यह रोज की क़वायद है।

रामसिंह—हम इसलिये भी आए थे कि तुम्हारा राज़ है, तो चले चलो, बुला लो, अभी गया न होगा, हम तुमको तुम्हारा राज़ दे दें। फिर किसी दूसरे ज़रिये हमारे यहाँ आवेंगे तो यह सबूत काफ़ी है कि तुम्हारी मार्फ़त वह आए थे।

मनराखन ने समझने की कोशिश की, क्योंकि दुपहर में मनोहर ने उससे कहा था, गाँव के बाहर का राज़ हमारे रिश्तेदारों का है। रामसिंह के आने का कारण भी उसकी समझ में आ गया कि वहाँ के ज़मींदारों में खटपट हो गयी है। वह खामोश रहा। रामसिंह को उससे कुछ झिझक हुई। कहा, व्यवहार वह जो न छूटे। दाँव वह जो वक़्त पर काम दे। इतने दिनों से हम उसको लड़ा रहे हैं इसके लिए भरोसा तुम्हारा था।

मनराखन—चलो, सिपाही भेज कर बुलवा लेते हैं, और कह देते हैं कि तुमको इनके यहाँ लड़ने के लिए जाना है तो इनकी मर्ज़ी के मुआफ़िक ही रहना होगा, नहीं तो अपना रास्ता नापो।

भेंड़ के किनारे उकड़ू बैठे तीतर चराते हुए मनराखन ने पिंजड़े

में तीतर को ले लिया ग्रौर झूमता हुग्रा गाँव को चला, साथ में रामसिंह ।

मनराखन के दरवाज़े, बैठक जमी । अभी सूरज डूबा न था । सिपाही को हेच-खाया समझ कर मनराखन ने एक किसान को बुला लाने के लिये भेजा । तब तक व्यवहार की इधर-उधर की बातें होती रहीं जो कोरी बातें हैं। किसान ने लौट कर खबर दी, मनोहर घर में नहीं है ।

रामसिंह चलने को हुए । कहा, ज़मींदार का मामला है, भाई पीठ बचाए रहना । हमारी पीठ लगी तो तुम्हारी भी लगी ।

मनराखन ने बढ़ावा देकर कहा, इस मामले में उस्ताद को छूने वाला कोई नहीं । कोई ऊँची-नीची बात गुज़री तो साले को बँधवा कर भिजवा दूँगा, खातिरजमा रहे ।

रामसिंह को प्रबोध हुग्रा । कहा, ग्रब सूर्य ग्रस्त होने को है, चलना चाहिये । बड़ा बुरा हाल हो रहा है, ग्रौर इसी बात को ले कर । बैठे-ठाले एक बला गले लगी ।

मनराखन ने फिर ढाढ़स बँधाया—एक चड्ढी गँठवाते हैं बहुत जल्द । जब उन्होंने हमारा राज नहीं माना, तो हमारा ग्रपमान कर चुके । यह है कि ग्रब ग्रागे से होशियार रहना चाहिये कि इस ग्रादमी की पैठ न हो ।

मेहमानदारी बढ़ाने की गरज़ से मनराखन ने एक पासी को बुलाया ग्रौर गाँव के किनारे तक छोड़ ग्राने की ग्राज्ञा दी ।

रामसिंह ने इसको राजसी सम्मान समझा। उनको यह न मालूम था कि यह पासी बदमाश है। सीना ताने चले चले।

ठंढाई छानकर यमुना प्रसाद दो-तीन और आदमियों के साथ उसी सीधे जंगल में गये। निबट चुके थे कि रामसिंह को बाग़ों के भीतर से एक आदमी के साथ आते हुए देखा। पड़ोस के गाँव का पासी, उसको सभी पहचानते थे। लोगों को देख कर पासी वहीं खड़ा हो गया। रामसिंह से दबंग गले से कहा, अब चले जाओ ठाकुर। लोगों ने यह भी सुना। रामसिंह अपने रास्ते चले गये। घर पहुँचकर दरवाज़ा बन्द कर लिया और लड़कों को समझा दिया कि कोई आवे तो कह दें कि अखाड़ा न लगेगा।

★

७

मनोहर से मिल कर बातचीत करने से पहले जमींदार रामराखन का एक और निश्चय हुआ, जब चौपाल में वह बैठे थे, दिया-बत्ती को घंटे भर हो चुका था, यमुनाप्रसाद आए, कहा, पहलवान ने जमींदार को मानते हुए भो नहीं माना, खास तौर से आपके बारे में। रामराखन ने कहा, हम-तुम एक ही हैं। यमुनाप्रसाद ने जवाब दिया, हम अकेले पड़ते हैं और गांव के मामले में तुमको बड़ा मानते ही हैं, और तुम्हारी मदद भी हमको दरकार होगी। तुम बात दो तो कुछ खा-पी लिया जाय, और इस सर चढ़े को जमीन भी दिखा दी जाय मगर अकेले हैं।

रामराखन ने आहिस्ते से पूछा वह पेंच भी बता दो जिस पर चढ़ा है।

यमुनाप्रसाद ने कहा, जब तुम्हारी पुकार होगी, तुम खुद कुल समाचार सुन लोगे।

यमुनाप्रसाद ने फिर बड़े ज़मींदार को समझाते हुए कहा, भाई देखो, आए तुम हो, हमारा आदमी अब भी हमारा आदमी है। वह तुम्हारा आदमी है, लेकिन इस मामले में तुमसे कट चुका है। उसके खिलाफ़ कोई कार्रवाई करो तो हमसे ज़रूर पूछ लो। साथ तभी पूरा। नहीं, तो दाँव खाली जायगा। गाँव के और दस आदमियों का दबाव होगा, तुम कुछ कहोगे, हम कुछ कहेंगे।

यमुनाप्रसाद ने फिर दब कर कहा, हमारी कोई शान ज़मींदारी वाली न रही ?

रामराखन ने ढाढ़स बँधाते हुए कहा, जो हाल तुम्हारा है वही हमारा भी। ज़िले के दूसरे बड़े जमींदार के सामने हमारी भी कोई हक़ीक़त नहीं गोकि हमारे सीधे तअल्लुक़ हैं। ऐसी बात पड़ी तो वह हमसे बातें लेगा। ज़मींदारी के मामले में सवालों का जवाब देने के लिये जब ज़िले से दो ही एक आदमी खड़े होंगे तब कई मानों में हम नहीं आ सकते। लिहाज़ा बात हमसे कर लो तो बल न पड़ेगा, बल्कि बल बढ़ेगा।

यमुनाप्रसाद ने कहा, आज मार्के का गठना गठा है। हम देवीप्रसाद और शिवकुमार जंगल गये थे, उस वक़्त पहलवान राजपुर के बदमाश बहादुर के साथ चले आ रहे थे। हमसे बात-चीत होने के बाद ही जान पड़ता है वह राजपुर गये थे। वहाँ के ज़मींदारों से कुछ भला-बुरा कहा होगा। उन का बदमाश

पासी साथ ले कर आये। दोनों साथियों ने पासी को देखा है। इतने से कोई मामला गाँठ दिया जायगा तो गठ जायगा।

रामराखन की लार टपकी। कहा, इधर दो-चार हज़ार इकट्ठे कर लिये होंगे। चलता है तो जैसे धरती धमकती है।

यमुनाप्रसाद ने कहा, हाँ, पाँचों घी में हैं। आजकल दूनी खुराक है। कड़खे ही बोलता है।

रामराखन ने कहा, तो मौका न चूकना चाहिये। तुम्हारा कोई आदमी भी है?

यमुनाप्रसाद ने कहा, शिवकुमार को तैयार कर लिया जाय, इसने देखा भी है, मुद्दई हो जाय। हम दोनों गवाही में रहेंगे। एक गवाह को वह जानता है; एक तैयार कर लिया जा सकता है अगर हम गवाही न देना चाहेंगे।

रामराखन ने कहा, शिवकुमार कमज़ोर है। वादी कुछ मालदार होना चाहिये। अच्छा सुनो, तुम्हारे हल्के में मिश्र जी रहते हैं। हमारे मान्य हैं और लक्ष्मी की कृपा भी है। तुम चले जाओ, उनको बुला लाओ। तब तक हम मनोहर को समझा लेंगे, क्योंकि पेशबन्दी ज़रूरी है।

यमुनाप्रसाद माधव मिश्र को बुलाने के लिये गये। रामराखन मकान के अन्दर अपने घर में गये और चबूतरे पर कसरत करते हुए मनोहर को बुला भेजा। पिछले अंक में लिखी हुई बातें,

मनोहर से करके अपने पलंग पर आ गये। आधे घंटे के अन्दर यमुनाप्रसाद मिश्र जी को ले कर ज़मींदार साहब के कमरे में दाखिल हुए। इन तीनों के सिवा वहाँ और कोई न था।

रामराखन ने आदर से मिश्र जी को बैठाया। सम्मान से उभरते हुए भी, ज़मींदार-श्रेणी को मिश्र जी काल जैसा देखते हैं। दुनियावी कामकाज में उनकी मान्यता काम नहीं करती और अगर ज़मींदार के इशारे पर न चलें तो गाँव में महीने भर भी गुज़र न हो, ताज़ीरात हिन्द के किसी दफ़े के शिकार हों और जेल की हवा खाएँ। कई दफ़े इसी मान्यता के कारण जाते-जाते बचे। ऊँचे दर्जे के ब्राह्मणत्व का ख्याल नहीं। किसी भी मामले में नहीं लड़ता। उस का हकदार मिश्र घराना भगवान तो क्या शैतान के सामने भी झूठ नहीं कह सकता, यह भावना उ गई है, जैसे एक गाड़ी लीक-लीक चली जा रही हो, यह हाल है। मरजाद के कारण उनको कोई फ़ायदा नहीं पहुँचता। ज़मींदार दबाने के काम में उनसे हर तरह की मदद लिया करते हैं। बुलाव के साथ उनके होश हिरन हो गए, मगर चीं-चिपड़ न की। रामराखन के नाम से कुछ हिम्मत हुई। साथ चले आये।

रामराखन पहले यमुनाप्रसाद को एकान्त में ले गये। कहा, आधी रात लोगों की आँख बचा कर अपनी सीढ़ी इन को दे

देना, बाहर दीवार में लगी छोड़ देंगे और तीन-चार बजे के क़रीब चोरों का हल्ला मचा देंगे।

लौटकर उन्होंने मिश्रजी से कहा, मिश्रजी, ज़मींदारी के कार्य ही टेढ़े हैं। लेकिन मंडप के नीचे थानेदार और डिप्टी क्या, कमिश्नर के बाप भी पैर नहीं रख सकते और वह मान नहीं पा सकते जो आप को मिलता है। आप ख़ातिर जमा रखिये। ज़मींदार का साथ करनेवाला, ज़मींदार का आदमी, सरकार के खास आदमियों में हैं; उसका बाल बाँका भी नहीं हो सकता; कहने के मुआफ़िक़ पाँच सौ कम से कम बताइएगा, बल्कि और ज़्यादा। सन्दूक़ के ताले-वाले तोड़ रखिएगा।

मिश्रजी अनुभवी आदमी, मुस्कराए। पूछा, किसी की शक़्ल का बयान तो नहीं देना?

रामराखन हँसे। कहा, मिश्रजी ज़मींदार पर भी एक हाथ रखते हैं।

स्नेह से कहा, जांघें दोनों अपनी हैं; यह उधर गई तो लाज गई, वह उधर गई तो भी लाज गई। आप तो जानते हैं बदमाश फँसाना और उसकी निगरानी रखना हमारा काम है; लिहाज़ा, कहिएगा कि हट्टा-कट्टा आदमी था। कुछ और भी थे। अँधेरा पाख है; कुछ साफ़ नहीं दिखा।

★

८

लौटते-लौटते माधव मिश्र ने अन्दाज़ा लगा लिया कि इशारा किसकी तरफ़ हो सकता है। यमुनाप्रसाद ने बनावटी स्वरों को सहज बना कर कहा, सरकार का काम सरकार ही जाने।

माधव मिश्र मन मसोस कर रह गये। जानते थे कि गाँव के चौकीदार सधे हैं इन्हीं के जोतदार हैं। सिपाही, थानेदार भी इनके दरवाज़े उतरते हैं।

जब घर के पास आए, यमुनाप्रसाद ने कहा, रात बारह बजे आकर हमारी सीढ़ी उठा ले जाना, हम इसी जगह डाल देंगे। कह देंगे कि घर चू रहा था, मिट्टी लगाने के लिए सीढ़ी निकाली थी। दिन भर मिट्टी दबाई गयी थी। तुम यह न कहना कि सीढ़ी तुम ले गये हो। सिर्फ़ शोर मचाना।

कहकर राम-राम करने लगे और दुबक कर घर घुसते हुए भक्ति

पूर्वक सुना गए, सरकार का काम सरकार ही जाने। मिश्रजी भलमनसाहत के कारण मंजूर करते हुए दुबक कर सोलह आने में एक आने रह गये। अपना जी लिये हुए घर गये और औरतों को समझाया, कही दीवार न सुन ले, सरकारी काम है, पिछली रात चिल्लाना है। आधी रात को हम बाहर जायेंगे और लौट आयेंगे। नहीं तो मरजाद न रहेगी। और बहुत कुछ करना होगा; लो, समझाए देते हैं।

एक कोठरी का ताला खोल दिया। बक्सों के ताले तोड़ डाले। भीतर का सामान उठा कर दूसरी जगह हिफ़ाज़त से रख दिया।

लौट कर औरतों से कहा, ए बातें हैं। नहीं तो मरजाद न रहेगी। कैद भुगतना होगा, और भी बेइज्ज़ती हो वह थोड़ी।

घर में त्रास का वातावरण फैला। सिसकते हुए भी सबके मुँह बँधे रहे। इस परिवार में रोटियाँ शाम को ही खा ली जाती हैं, जिससे चिराग़ का तेल बचे। साधारण मजे में हैं। प्रतिष्ठा झूठी पड़ जाने पर भी बचाये रहने की सूरत में रहते हैं।

लड़के सो चुके थे। औरतें मसान-सी जगती रहीं। दस बजा, ग्यारह बजा, बारह बजा।

माधव मिश्र दबे-पैर उठे और आवाज़ न हो, आहट न मिले, ऐसी सावधानी से दरवाज़ा खोला और बाहर निकले। ज़मींदार की दीवार को बग़ल रखी हुई सीढ़ी उठा ली और उसी कोठरी

के सीधे पिछवाड़े लगा दी। फिर वैसे ही दबे पैर लौट कर बैठे। सारी रात साँसत में पार हुई। चार बजे के क़रीब ज़ोर का रोना-पीटना शुरू हुआ। पड़ोसियों ने सुना, मगर चुपकी साध ली। सवेरा न हुआ था इसलिए उन्होंने निकलना नामुनासिब समझा, डरे कि चोरों में शुमार होगी।

धीरे-धीरे पौ फटी। लोग जंगल को निकले। ढोर छुटे। रास्ते पर इक्के-दुक्के आदमी का निकलना जारी हुआ। माधव मिश्र सर लटका कर दरवाज़े आ बैठे। भीतर रह-रह कर चीख लगती रही। बाहर के लोगों को अभी तक अच्छी तरह न मालूम हुआ था कि मामला क्या है। माधव मिश्र ज़ाहिरा तौर से कहते न थे सिवा सर पीटने के और यह कहने के कि हाय रे लुट गये, करम-दंड है, मर-जाद धूल में मिल गयी, गाँव छोड़ कर कहाँ जायँ, हे भगवान्, बुरे का सत्यानाश कर, कहाँ सोया है, कन्हैया, गौ-ब्राह्मण बेक़सूर सताये जाते हैं, कंस का राज बढ़ा है, हे राम, फिर राक्षस छा गये, डूब रहे हैं भगवन् इस भवसागर में, उबारो, आदि-आदि।

इससे किसी की समझ में कुछ न आया सिवा इसके कि माधव मिश्र बहुत दुखी हो रहे हैं। भेद खुलेगा इस डर से लोग मुँह छिपाये इधर-उधर घूमते रहे। औरतों में कानाफूसी होती रही। आदमी मक्कार है, यह सब लोग जानते हैं, गाँव में यह खबर फैल गई कि माधव मिश्र के यहाँ कुछ हुआ है।

सूरज निकलने को हुआ, माधव ज़मींदार यमुनाप्रसाद के

मकान चले। खबर ले जाने वाले वहाँ दो-एक आदमी और थे। ज़मींदार ने माधव को देखते ही पूछा, क्या माजरा है, मिश्रजी?

माधव मिश्र ने कहा, मालिक! कहीं के न रहे।

ज़मींदार ने लोगों से कहा, भाई, बड़े आदमी का मामला है, इसको देखना-भालना है। हाल मालूम हो जाने पर आप लोगों से राज़ खोलें।

यह कह कर तुरन्त बढ़े और रास्ते पर ही माधव मिश्र को लिया। और आओ, आओ' कहते हुए मकान की ओर न आ कर गलियारे की ओर बढ़े।

लोग चौकन्ने थे कि न जाने कौन-सा पहाड़ टूटे, आपस में बन लेंगे तब बना कर कहेंगे।

चौपाल की चारपाई से लोग-बाग उठ कर अपने घरों की ओर चले। यमुनाप्रसाद माधव मिश्र को लिए हुए गलियारे-गलियारे रामराखन के मकान आए।

रात भर पं० रामराखन को नींद नहीं आई, कुकुर-निंदिया की तरह दो एक झपकियाँ लीं, बाक़ी सारी रात इसको फाँसने और उसको खोलने में बीती।

धनी वर्ग की आमदनी का उपाय देहात में यही है। कौन परदेशी है, कितना कमा लाया, कौन किसान आलू या गन्ने की खेती से दो-चार सौ रुपये जोड़ चुका, कौन दुकानदार अपने व्यवसाय में फ़ायदा उठा रहा है, ये लोग पूरी जानकारी रखते

हैं। उनके घरों के जवान बेटी, बेटों, पतोहू और दामादों को फँसा-कर रिश्वत ले-लिवा कर, या मुक़दमे लड़वा कर या गवाहियाँ दिलवा कर अपनी जेब भरते हैं।

रामराखन दातौन-कुल्ला कर चुके थे। दरवाज़े पर पानी सोखने का दाग़ बना था। यमुनाप्रसाद और माधव मिश्र को सामने की दूसरी चारपाई पर बैठाला। यमुनाप्रसाद ने कहा, काम हो गया।

★

६

मनोहर को रात तीन बजे रामराखन ने जगा दिया। समझा दिया, गाँव के स्टेशन पर न चढ़ कर अगले स्टेशन पर चढ़े। चार कोस के फ़ासले पर है। सवेरे पहुँच जायगा। आठ बजे गाड़ी वहाँ पहुँचती है। उसी से रवाना हो जाय और छः महीने तक कम-से कम गाँव में मुँह न दिखाए।

मनोहर आग-बबूला था ही। उठ कर मुस्तैदी से चल दिया। सरायन के किनारे से कच्ची सड़क गई है, उसीको पकड़े हुए चला। बरसात में उसकी हालत अच्छी न थी, जगह-जगह गड्ढे पानी से भरे थे, मगर रास्ता-चलनेवाले के लिये राह निकल आती है। मनोहर पैर बढ़ाता गया। पौ फ़टते-फ़टते आधा रास्ता तै कर डाला। उसको मालूम था, इस प्रान्त में बड़े जंगली जानवर का डर नहीं, फिर भी भेड़िये कहीं-कहीं बरसाती नदी और नालों के

किनारे माँदों में रहते हैं। एक डंडा लिए सजग राही, क़िस्मत का मारा हुआ चलता गया। कसरती जवान के लिये चार कोस का फ़ासला कोई दूर नहीं। ऐसे बदज़ातों से रिश्ता छूटा, इसकी ख़ुशी भी उमड़ पड़ती थी।

उसको पछाँहवाली गाड़ी से जाना था बम्बई के लिये। वह गाड़ी तीन घंटे पूरबवाली गाड़ी के बाद आती थी। पूरबवाली का समय उसके स्टेशन पहुँचते हो गया। उसने देखा, सुबह की सुर्ख़ी के साथ छोटे से सुर्ख़ स्टेशन के मुसाफिरख़ाने में पूरब जाने वालों की भीड़ लगी है। वहीं तीन-चार खोंचेवाले भी बैठे हैं, किसी के पान और बीड़ी, किसी के पेड़े और वर्फ़ी, किसी के तेल के सेव और चने भुने हुए लगे हैं। बाहर स्टेशन की तरफ़ नीले फूल की लता चढ़ाई हुई सारे स्टेशन की दीवार पर छतर रही है। कई कुत्ते परम परिचितों की तरह बैठे देख रहे हैं। सामने फैला हुआ ऊसर! दूर तक निगाह चली जाती है। बीच में ऊसर का छोटा मगर पुराना बरगद का पेड़ देख पड़ता है, जिसके एक बग़ल एक बारहदरी है और दूसरी बग़ल एक पक्का कुआँ, सामने तालाब। आते हुए यात्रियों का ताँता और गाड़ियाँ देख पड़ती हैं।

घंटी हुई। सिगनल गिरा। टिकटवाला दरवाज़ा खुला। टिकट लेने वाले मुसाफ़िर एक दूसरे पर चढ़ गये। मनोहर खड़ा देखता रहा। उसको पछाँह जाना है। कुछ देर बाद मंसूबा पलटा। बम्बई के कारनामे याद आए। ज़लालत से नसों में ख़ून दौड़ने लगा। सोचा,

क्या बम्बई में मुँह दिखाए, बाप की आँख का काँटा हो या धनिकों के जाल में फँसे ?

इरादा पलटा। खून की तेजी धीमी नहीं पड़ी। अपने आप पैर उठे। यात्रियों के पीछे एक तरफ़ खड़ा हो गया। वे टिकट ले कर बाहर निकले। एक ने टिकट दिखा कर कहा, नम्बरदार, देखो तो, टिकट कहाँ का है। मनोहर के जले पर नमक पड़ा। मगर उसने यह न कहा कि वह नम्बरदार नहीं, न यही कि वह टिकट न देखेगा। नम्बरदार के लिए चढ़ी चिढ़ को दबा कर धुँधले प्रकाश में पड़ कर टिकट दे दिया। यात्रियों के बढ़ने के साथ बढ़ता गया। झरोखे के पास पहुँच कर बिना कुछ सोचे कहा, बनारस के लिए एक टिकट। एक नोट पाँच रुपये का दिया। टिकट के साथ कुछ पैसे वापस मिले; ले कर बाहर निकला। पान खाये, स्टेशन पर टहलता रहा, गाड़ी डिस्ट्रिक्ट सिगनल पार कर आई। यात्रियों की भीड़ बढ़ी। बैठे लोग खड़े हो गये। गाड़ी प्लेटफार्म पर आ गई। मनोहर बिना कपड़े-लत्ते के, बिना लोटे-थाली के एक जादू का मारा जैसे, खिड़की खोल कर एक डब्बे में बैठ गया।

★

१०

वातचीत तय हो गई कि पहलवान रार्मासह से पाँच सौ रुपये लिए जायँ। यमुना प्रसाद बुलाकर आपस में तय कर लें। अगर पहलवान रार्मासह राजी न हों तो रिपोर्ट कर दी जाय।

अभी तक चौकीदार के कान में बात न पड़ी थी। वह इस मामले से नावाक़िफ़ था।

यमुनाप्रसाद गांव के भीतर गये और धीमे गले से पहलवान को आवाज़ दी। पहलवान भीतर थे। ज़मींदार का गला समझ कर बाहर निकल आए। यमुनाप्रसाद उनको बुलाकर गाँव के बाहर एक पेड़ के नीचे ले चले। छाँह में दोनों बैठे। यमुनाप्रसाद ने कहा, पहलवान, ज़मींदार का मामला है। सरकार भी ज़मींदार है, आपका पक्ष लेने के लिए आपका रिश्तेदार राजा रईस कोई गाँव में खड़ा न होगा। मामलेदारों में उसकी कोई गवाही काम न देगी।

पहलवान लचे। जी से घबराये। कहा, "मामला तो हमको कुछ मालूम नहीं। राय हम इस पर क्या दें ?

राय नहीं। रुपये चाहिएँ। पुलिस के हाथ अब जाने ही वाला है। तब दूने से ज्यादा पर कहीं छूटियेगा।

देखिये, बिना कुसूर के अगर सजा भी हो जायगी तो काट लेंगे। और क्या कहें ?

तो पहलवान, सजा ही होगी। जिन्दगी भर के लिए दाग़ी बन जाइयेगा। फिर जमींदार ही का सहारा ढूँढ़ना होगा और गाँव में।

इतने दबकर तो कभी नहीं रहे। अब मालूम भी नहीं कि माजरा क्या है, तब क्या हाँ करें और क्या नहीं ? आप माजरा बतला दीजिये। हम आप को सही जवाब देंगे।

भाई, बात हमारी हो तो कहें। दुनिया-भर जुत गई, अभी मौसम का रंग ही नहीं मालूम। कहीं भी जाइयेगा, राज ही मिलेगा अपने घर में तो पक्की बात ले लीजिये।

तो हमारे घर हर्रासिंगार के फूलों की तरह रुपये नहीं बिछ जाते। हम बिछा कहाँ से दें ? अगर पुलिस के पेच में आ गये और अपने को बेकसूर पाया तो आगे दुश्मन से बदला निकाल लेंगे। ठाकुर हो कर और कौन-सी सचाई वाली बात कहें ?

तो, कहो तो हम चलें। देर हो रही है।

पहलवान बहुत विकल हुए। जमीनो-आसमान के कुलाबे मिलाने लगे मगर जोड़ नहीं बैठा, जैसे जंगल में भटकते फिर रहे

हों। पहलवान के आँसू बड़ी करुणा से निकलते हैं। रामसिंह के दोनों गालों से बड़े-बड़े आँसू टपकते रहे। उन्होंने कहा, कहीं इतनी भी लकड़ी तो पकड़ाई होती ! रपोट करने वाला व्यक्ति कौन है ? हमने कौन-सी खता की ?

पहलवान, यह अपने-आप से पूछिये। मगर हमारी मार्फ़त यह रुपये आप दे देंगे तो मामला ले-दे कर दबा दिया जायगा, नहीं तो आप फँसेंगे और गाँव में आपका मददगार न खड़ा होगा। हमको यह दुःख है कि आपकी भलमनसी में बट्टा लगते देख कर भी हम किनारा किये रहेंगे क्योंकि पानी में रह कर मगर से बैर हम न करेंगे। इसीलिये कहते हैं कि जब फाँसी गले लग चुकी है, बुरा फ़ेल तैयार हो गया है, मामला सही हो या ग़लत, तो पुलिस के हाथ जाने के पहले उसकी पायेदारी मार दी जानी चाहिये, नहीं तो इस फाँसी से छुटकारा न होगा। आप को किन्होंने फँसाया, किन्होंने नहीं, यह पुलिस से आप मालूम कर लीजियेगा, क्योंकि वहाँ वादी पहले रपोट करने के लिये जायगा।

रामसिंह ढाढ़ें मारकर रोने लगे। यमुनाप्रसाद के पैर पकड़ लिये। कहा, मालिक, हमसे खता हुई, हमने आपके सामने सर उठाया। हमारी इज़्ज़त बचाइये। यह ताब हममें नहीं कि सैकड़ों का झोंका सह जायँ। हम मिठाई खाने के लिये दो-चार रुपये की चपेट सह लेंगे।

यमुनाप्रसाद ने आँखें ढोरीं। कहा, पहलवान, मामला हमारा नहीं और अब बिल्कुल वक़्त नहीं रहा। अगर चार सौ रुपये पर आ जाइये तो हम बात-चीत करें।

पहलवान का फिर पैर मजबूत हुआ। कहा, जब कि आप किसी के भेजे हुए आये तो इतना बता दीजिये कि वह कौन है!

यमुनाप्रसाद ने कहा, यह हमको नहीं मालूम, क्योंकि मारफ़त...।

पहलवान ने कहा, तो या तो थानेदार ही ले जायँगे या बरी होंगे या काट लेंगे, मगर यमुनाप्रसाद, इस मामले को समझ कर ही हम जवाब देंगे जो ठाकुर का असली जवाब होगा। हमारी आँखों से दोस्त और दुश्मन भी गुज़र जायँगे। निगाह साफ़ हो जायगी। तब कहाँ वार करना चाहिये कहाँ नहीं हमारी समझ में आ जायगा।

यह कहकर घृणा से पहलवान चल दिये। यमुनाप्रसाद भी दूसरे रास्ते से रामराखन के दरवाज़े की तरफ चले।

★

११

ताल पड़ गई कि माधव मिश्र से रपोट करा दी जाय। गाँव का चौकीदार मातादीन साथ कर दिया गया।

माधव मिश्र सत्तू वांधे रहनेवाले आदमी रपोट करने चले। आगे-आगे बँधाई लाठी लिये चौकीदार मातादीन मारे खुशी के फूला सहीं समा रहा। जानता है, आजकल में सैकड़ों के वारे-न्यारे होंगे; गाँव और पड़ोस के कितने ही भले-बुरे आदमी फँसेंगे; मिलने-बिछुड़ने की कितनी बातचीत होगी, कितने दाँवपेंच खिलेंगे-खुलेंगे। ज़मींदार और महाजन भी इस रुपये में शरीक होंगे, कहते हैं, रिश्वत का रुपया लाखों और करोड़ों तक पहुँचता है और बड़े-से-बड़ा इसका साझीदार है; इस काम में पुलिस के मददगार जितने आदमी हों, वे सरकार के आदमी कहे जाते हैं, उनसे इसी तरह के काम लिये जाते हैं, जब कमज़ोर पड़े तब वे नेकमाश धीरे-धीरे

बदमाश क़रार दिए जाते हैं और बाँध कर भेज दिये जाते हैं, आमदनी का ज़रिया जेल में भी है, मजे में क़ालीन बिनते रहें, दस पैसा खाये और दो रुपया उगले, क्या चरख़ा है! मातादीन मन-ही-मन मुस्कराया।

मिश्रजी भी चलते-चलते अपनी ढाई-चावलों की खिचड़ी पकाते रहे। वह सरकार के आदमी हैं, स पर उन को फ़ख्र भी है। उनकी मरजाद का एक बाल भी नहीं टूट सकता। यह सरकार हिन्दुस्तान में इसीलिए है और इसी ढर्रे से चला कर बाघ और बकरी को एक घाट पानी पिलाती है। रपोट के दो रुपये जो लिये हुए थे, वे ज़मींदार रामराखन के दिये हुए थे। उन की याद आते ही उन्होंने कहा, "देखो मातादीन, रपोट में दो रुपये लगेंगे। यहीं से श्रीगणेश है। यह दो-दो-सौ पर ख़त्म होता है या दो-हजार पर; स गाँव में और गुन्जाइश तो है नहीं, नहीं तो दो लाख भी कहते, दो करोड़ भी; यह आँख के सामने आयेगा।"

मातादीन ने तम्बाकू ठोक कर खाई और कहा, हमको तो बीस से ज्यादा की गिनती ही नहीं आती, करोड़ के आगे और क्या है?

माधो मिश्र ने कहा, और आगे का हिसाब नहीं लिखा जाता। यों तो शंख-महाशंख तक है।

मातादीन ने कहा, जैसे गाँव का रहनेवाला शहर का हिसाब नहीं जानता, वैसे ही थाने का हिसाब थाने ही के आदमियों को

मालूम है। जहाँ तक तुम गिनती गिनाते हो, उससे और आगे तक हिसाब पहुँचता है। यह कह कर मातादीन गम्भीर हो गया। फिर तम्बाकू की एक पीक थूकी। मिश्र जी ने सोचा, यह इस वक़्त लाठी और साफे के साथ है, कौन इसके मुँह लगे ?

दोनों पगडंडी पकड़े हुए बढ़ते गए। एक बग़ल बागों की क़तार, दूसरी बग़ल खेत। बाग़ों से चिड़ियों की चहक सुन पड़ती हुई। गलारें, तोते, बुलबुलें, पिड़कियाँ, रुकमिनें, सतभैये, कौवे, पपीहे और कोयलें अपनी-अपनी डाल से अपनी-अपनी बोली सुनाती हुई। खेतों पर कहीं-कहीं हिरनों के झुण्ड भगते हुए। कहीं ढोर चरते हुए। कहीं नाले, कहीं बरसाती नदी। किनारों में बबूलों के बेशुमार पेड़। काँटों से कहीं-कहीं पगडंडी रुँधी हुई। थूहड़ के पेड़ बाग़ों की खाई के चारों तरफ़ लगे शोभा बढ़ाते हुए।

दिन डेढ़ पहर चढ़ आया। सामने पक्का तालाब दिखा। एक तरफ़ विशाल शिवालय जिसकी दूसरी तरफ पक्का कुआँ। मिश्रजी ने मातादीन से कहा, या तो तुम चले चलो, थाना नज़दीक ही है, चलकर आराम करो, हम हाथ मुँह धो कर थोड़ा-सा पानी पी लें, वहाँ फिर लिखाने के झंझट में पड़ेंगे, चित ठिकाने नहीं, कुछ का कुछ न कह जायँ, हाकिम का सामना ठहरा या ठहरो।

मातादीन ने कहा, बड़े आदमी हो कर बदल रहे हो। हम तो साथ ही हैं। जो खाओ हम को भी खिलाओ। हम तुमको छोड़ कर कहाँ जायँ ?

मिश्रजी ने हाँथ-मुँह धोये और मिली पाँच भेलियों में बड़ी-बड़ी दो भेलियाँ गुड़ की निकालीं। एक अपने लिए रक्खी, एक मातादीन को दी। मातादीन हराम का माल लापरवाही से गले के नीचे उतारने लगा। मिश्रजी भी निःसंकोच हो कर गुड़ की भेली खाने लगे। दोनों ने खा कर पानी पिया, फिर थाने के लिये रवाना हुए।

थाने की लाल दीवार दिखने लगी। सड़क के किनारे के पेड़ों की आड़ थी, मगर पेड़ियों की दरार से निगाह पहुँच जाती है। मातादीन का वीरत्व थाने के दिखने के साथ-साथ बढ़ गया। मिश्रजी अभ्यासी मनुष्य की चाल से चलते गये।

थाना आया। दोनों अहाते के अन्दर गये। चौकीदार ने मुंशी को सलाम किया।

मुंशी ने पूछा, किस मौजे के हो ?

चौकीदार ने कहा, हुजूर, सरायन का।

मुंशी ने पूछा, और यह कौन है ?

चौकीदार ने जवाब दिया, वहीं के ब्राह्मण रपोट कराने आए हैं।

मुंशी जमे। कँची निगाह से एक दफ़े मिश्रजी को देख लिया, फिर कहा, इधर आओ। मिश्रजी बढ़े और झुक कर सलाम किया।

मुंशी ने कहा, लाओ, यह पहली सरकार का है।

मिश्रजी ने कहा, अभी दिया क्या ?

डाँटकर मुंशी जी ने माँ की गाली दी ।

मिश्रजी ने कहा, यह एक दूसरी रपोट होगी ।

मुंशी पहले घबराए फिर उठकर चले गये। सोचा था, बैठा रहेगा, झक मारेगा, रपोट लिखायेगा ।

उठ कर अपने डेरे की तरफ़ चले तो चौकीदार ने बढ़कर एकान्त में कहा, आप पुलिस का राज बिगाड़ते हैं, हम उसी गाँव में रहते हैं या और कहीं? मुंशी झेंप सँभाल कर सर गड़ाए हुए चले ही गये ।

चौकीदार थानेदार के पास गया । थानेदार ने मिश्रजी को बुलाया और पूछ-ताछ की । मिश्रजी ने कहा, अब पहला मामला तो यही है कि थाने आने पर गलियाँ मिलती हैं या यह मुंशीजी किसी फेर में हैं ?

थानेदार ने कहा, खैर कल हम आपके गाँव आयेंगे और तहक़ीकात कर जायेंगे जब चौकीदार को आप लाये तो रपोट हो चुकी ।

चौकीदार का नाम लेकर पूछा, क्या रपोट वाले रुपये ले लिये ?

मिश्रजी ने कहा, गाँव में आप लीजियेगा ।

थानेदार के चेहरे पर शिकनें पड़ीं, मगर चुपचाप बैठे रहे ।

मिश्रजी थाने से वाहर निकल आए और गाँव का रास्ता पकड़ा ।

☆

१२

गाँव लौटते मिश्रजी का चौकीदार से साथ छुट गया। थाने में चौकीदार ने तरह-तरह की सच-झूठ बातों का थानेदार से राज खोला, जिसमें गाँव के बाशिन्दों की शिकायत ज़्यादा थी। सरकारी पक्ष को प्रबल किए हुए था। मुसलमान के प्रति, उसके बड़प्पन के हक़ के कारण ईर्ष्या भी थी, साथ ही वह यह भी समझता था, सरकार मुसलमान के खिलाफ़ बातचीत कराना चाहती है और जब कि एक मामला आँख का देखा गठ चुका है, तब इसको छोड़ना बेवकूफ़ का काम होगा। ईश्वर की कृपा से थानेदार भी मुसलमान थे, छोटे थानेदार हिन्दू थे, ठाकुर। इन्सपेक्टर हिन्दू थे। मातादीन इन्हीं कड़ियों से चढ़ता था। जी खोलकर उसने मुंशी हक़ीक़त अली खाँ की शिकायत की। मारे गरमी के वह रपोट न लिख कर गालियाँ देते हुए कुर्सी छोड़ कर चल दिए, कहा। यह भी कहा कि

वह ब्राह्मण पानीदार हैं, तअज्जुब नहीं कि दरख्वास्त कर दे। और भी बहुत तरह से डरवाया। थानेदार ने कहा, राज़ रख दो।

चौकीदार ने कहा, राज़ मुंशी जी को दे चुके हैं। आप मुंशी-जी हमारा राज़ दिलवाइये।

थानेदार ने कहा, मैं थानेदार हूँ तो दूसरा ही चौकीदार आयेगा।

मातादीन ने जवाब दिया, मैं ढाई रुपये की नौकरी के मत्थे नहीं हूँ, दुहाई इंस्पेक्टर साहब की, और आपसे कहता हूँ कि अगर उस मौज़े में अपनी बल्ली गाड़ लें इस मामले में बिना मेरी मदद के, तो मैं अपने बाप का पैदा किया हुआ मातादीन नहीं।

इस तरह थाने में खासी बमचख रही।

मिश्रजी गाँव लौट कर किसीके यहाँ न गये, ठंढे हो कर थोड़ा-सा पानी पिया और पहलवान के दरावज़े की तरफ़ चले। हथेली के इशारे से पहलवान को बुलाया। वह चौपाल में चुपचाप बैठे सोच विचार में थे। इशारा देख कर मिश्रजी के पास उठ आए। मिश्रजी उनको ले कर नज़दीक के बाग़ की तरफ़ गये। एक महुवे की छाँह में बातचीत करने लगे, कहा—पहलवान, हम-तुम एक ही गाँव में रहते हैं, एक-दूसरे की मदद के लिये हैं, दुश्मनी के लिये नहीं। दुश्मनी कराई जाती है, नहीं तो बेइज्ज़ती होती है। और हम कुछ कह नहीं सकते, मगर जो कार्रवाई खिलाफ़ हो, आप उसी की समझें जो बड़ा है।

पहलवान के आँसू आ गये। कहा—भैया, एक जगह रहने का यह हाल है! कुछ हमको भी नहीं मालूम, नहीं जानते, कौन-सी लकड़ी फेरी जानेवाली है। जितने लोग आते हैं सब बात लेनेवाले, इज़्ज़त लेनेवाले।

मिश्रजी ने कहा, जाल-ही-जाल में हम-तुम जितनी मछलियाँ हैं फँसाई और निकाली जाती हैं। जितना वैर बढ़ता रहेगा, ज़मींदार और सरकार को उतना ही फ़ायदा है। बात की जड़ बेबात-की-बात में पड़ती है। इसके बाद बातों का ही जाल फैलता है। क्या आपसे किसी से लाग-डाँट थी?

पहलवान पशोपेश में पड़े। देखा, यहाँ भी राज़ देना है। कहा, उस गाँव का एक लड़का लड़ने आता था, या तो वह दुश्मनी की ग़रज़ से भेजा गया, या उसके आने पर उसके लोगों को बुरा लगा, और हमारी समझ में कुछ नहीं आता।

मिश्रजी ने कहा, आप हमको मानते हैं, सारा गाँव हम को मानता है। मान्य का काम यह नहीं होता कि वह अपने बन्धुओं को फँसाये। हम आपसे इतना कहे देते हैं कि हमारे जितने बयान होंगे उनमें आप अपने को न समझें और यहाँ आप हमारे साथ आए, यह किसी दूसरे से न कहें, दूसरों को ही कहने दें। हम आपके दुश्मन नहीं, यहीं से ज़ाहिर है। गाँव के दो-एक हम को आप को देख भी चुके होंगे। उन्हीं को कहने दीजिए। अगर हम को कहियेगा कि बुला ले गये थे तो इससे आप का न भला होगा और न

इस पंजे से छुटकारा, क्योंकि यह पंजा ही ऐसा है जो कभी किसी को छोड़ता नहीं। जाइये, हम जंगल जा रहे हैं, इस तरह दूसरों को भी हम को खुश करना पड़ता है, उन का रुख देखना पड़ता है और उन की बात भी माननी पड़ती है।

पहलवान को दिल में बल मिला। मिश्रजी भीटों के आगे वाली तलइया के किनारे मुँह-अँधेरे निपटने के लिये गये।

रात को भोजन-भाव करके मिश्रजी रिश्तेदार जमींदार के यहाँ भी हो आए। कोई बातचीत न की, कोई राज़ न दिया, सिवा इसके कि कल थानेदार आयेंगे। रामराखन को इतने से पूरा हाल जैसे मिल गया। गम्भीर मुद्रा से विचार करने लगे। मिश्रजी से कहा, हम बहुत थके हैं, अब हम को आराम करना है।

ज़मींदार ने हाथ जोड़ कर प्रणाम किया, मिश्रजी ने आशीर्वाद देकर रास्ता नापा। घर पहुँच कर दो रपोर्टें लिखीं, एक इंस्पेक्टर के नाम, दूसरी कप्तान पुलिस के नाम। काग़ज़, कलम-दावात घर में तैयार थे, रपोर्टें पूरी करके सिरनामे लिख कर रात ही को पास के लेटर-बाक्स में छोड़ आये। ब्राह्मण का ताव, सोचा कहीं सबेरे तक ठंडा न हो जाय, जहाँ सत्यनाश वहाँ साढ़े सत्यनाश। मिश्रजी मुंशी का नाम जानते थे। उनका काम ही इस हल्के का परिचय रखना था।

*

१३

दूसरे दिन आठ बजे दो सिपाहियों के साथ थानेदार आये। धर्मशाले में उतरे। गाँव के ज़मींदारों को बुलाया। चारों ओर हलचल मच गई। सब को निश्चय था कि रपोट हो चुकी है। मातादीन थानेदार से सहमत हो कर भी न हुआ। गाँव भर में उसने भी अपनी दो-रंगी उड़ाई थी। मजदूरों से अच्छे-अच्छे पलंग दो-तीन उठवा कर ज़मींदार रामराखन ने भिजवा दिये, साथ कालीन। घर में पूड़ी और साग का नाश्ता बनाने के लिए कह गए। थानेदार को यह पसन्द नहीं, मगर हिन्दुओं के गाँव में मुसलमान पकाने वाले के न होने पर यह खाना स्वीकार कर लेते हैं, साथ में कह भी देते हैं, हमारा खाना तो आप लोगों को मालूम है, बग़ैर उसके मज़ा नहीं आता, न पेट भरता है।

तीन-चार पीपल, पाकर और महुए के पेड़ धर्मशाला के आस-पास हैं। कुछ ही दूर एक पक्का तालाब, पक्का कुआँ स्वच्छ जलवाला

धर्मशाला के साथ लगा हुआ है। बग़ल में लड़कों ने एक अखाड़ा गोड़ रखा है कूदने के लिये। पीपल के नीचे चबूतरा है जिस पर पीपल की जड़ के साथ शिवजी रखे हुए हैं। गाँव का यह एक सबसे अधिक मनोहर स्थान है। यहाँ से तीन-चार लीकें दूसरे-दूसरे गाँवों को कट कर गई हैं। अगल-बग़ल खेत और बाग़ात हैं। दिन का दृश्य बड़ा ही सुहावना हो रहा है। खरीफ़ की हरियाली मन को मोहे ले रही है। पुरवाई के झोंके मतवाले किये जा रहे हैं। कुछ ही फ़ासले से गाँव शुरू है। पेड़ों पर बुलबुल, तोते, रुकमिनें, गलारें, क़बूतर आदि चहकते और गटरगूँ करते हैं। आम की कुन्जों से पपीहे और कोयल की होड़ सुनाई पड़ रही है।

थानेदार ने यहाँ डेरा इसलिये जमाया कि अपना दल यहाँ तैयार कर लें, तब मामले में हाथ लगायें। चौकीदार से जो कुछ उन को मालूम हुआ था वह बहुत पायेदार बात न थी, दूसरे मुंशी के ज़रा चले जाने पर रपोट लिखानेवाले मिश्र का थाना छोड़ कर चला जाना शक पैदा कर रहा था। फिर भी पुलिस पर कोई आक्षेप न हो इसलिये उन्होंने तहक़ीक़ात करनी चाही मगर छिपे तौर से। चौकीदार के कहने के अनुसार सिपाहियों ने मुख्य-मुख्य आदमियों को बुलाया। सधे लोग कौवे की तरह एक-दूसरे को देखते हुए आगे-पीछे चले।

चौकीदार एकान्त समझ कर मिश्रजी के पास गया और दोनों हाथ से विल दिखा कर थाने की मनोभावना समझाई और हिम्मत बँधाते हुए कहा, ढीले न पड़ना। कह कर चला गया।

मिश्रजी एकान्त देख कर पहलवान के यहाँ गये ग्रौर बाहर से ग्रावाज दी।

बुलाये जाने पर सिपाही की पगड़ी देख कर पहलवान को जूड़ी चढ़ ग्राई थी। जब मिश्रजी ने ग्रावाज़ दी, उन्होंने डरभूते स्वर से रज़ाई के भीतर से कहा, ग्ररे, जूड़ी चढ़ो है, क्या काम है? घर में कोई नहीं है।

मिश्रजी ने कहा, ग्रोढ़े-ग्रोढ़े चले चलो। नहीं तो मामला समझ में न ग्रायेगा, दोस्त ग्रौर दुश्मन की पहचान जाती रहेगी। हम ग्रागे-ग्रागे चलते हैं। हमारे तरफ़दार रहना।

पहलवान ने ग्रावाज़ दी, जब तुम कहते हो तब चलेंगे। रज़ाई की जगह चदरा ग्रोढ़ लेंगे। कह कर ज़ोर बाँधा कि मददगार है।

रामराखन ग्रपने पूरे सहायकों के साथ मामले को साध कर ग्रागे पीछे चले, रामराखन, लीलाराम, रामशंकर, यमुनाप्रसाद, देवीप्रसाद, शिवकुमार तथा गाँव के ग्रौर-ग्रौर ज़मींदार ग्रौर महाजन। एक-एक करके पलंग पर बैठे हुए थानेदार के पास पहुँचे ग्रौर कमर भर झुक कर सलाम करते गये; फिर दूसरी चारपाइयों पर ग्रदब के साथ बैठते रहे। गोड़इत लोगों को तम्बाकू खिलाता ग्रौर हुक्का पिलाता रहा। थानेदार के कहने के माफ़िक़, ग्रभी यह सरकारी काम नहीं, गाँव के लोगों से थानेदार की ग्रापसी बातचीत है।

इसी बीच मिश्रजी आये और साधारण रूप से थानेदार को सलाम किया।

यहाँ मिश्रजी का बड़प्पन रामराखन की नजर में आनेवाला नहीं और जब कि वह मुद्दई है। उन्होंने मिश्रजी को बुला कर नहीं बैठाला, यह बात मिश्रजी को खटकी। मगर कुछ बोले नहीं। संसारवाली नस दबाये हुए, होश दुरुस्त किये हुए, धर्मशाला के चबूतरे पर सब की तरफ़ मुँह करके बैठे। उनके बड़प्पन की तरह यह चबूतरा भी चारपाइयों से ऊँचा था। तेल लगाने के सहज स्वभाव से रामराखन ने हाथ उठा कर कहा, सरकार के सामने इस आसन से ऊँची जगह ऐसी हालत में मिश्रजी आप को न बैठना चाहिये।

मिश्रजी ने कहा, अगर आप इस चारपाई को उठा कर धर्मशाले में डाल दें, और थानेदार साहब बैठें तो और शोभित हो जाय। थानेदार को मुसलमान समझ कर मिश्रजी ने ज़मींदार पर धार्मिकता का एक हाथ रखा।

ज़मींदार खामोश रह गये। उन्होंने सोचा मुसलमान को हिन्दू धर्मशाला में घुसेड़ कर लोगों की निगाह में हम को गिराना चाहता है। कुछ नज़र बदली, मगर अन्दर से डरे कि मामला उन्हीं का गठाया हुआ है कहीं यह उल्टा खुदाई न गले डाल दे। दब कर ढाढस बँधाते हुए कहा, बैठे रहिए, जैसे चारपाई वैसे चबूतरा।

थानेदार बातचीत तोलतें रहे। इसी समय चदरा ओढ़े कोट पहने काँखते हुए पहलवान धीरे-धारे आये, और जहाँ मिश्रजी

बैठे थे उसी जगह, एक किनारे से थानेदार को दूर का सलाम करके, बैठे। उनको निश्चय था, यह गठना उन्हीं पर है।

एक चारपाई पर सिपाही बैठे थे। गाँव के तीन चौकीदार लाठी लिए हुए अगल-बगल खड़े थे। इक्के-दुक्के लोग जो राही थे या जिन का मामले से तअल्लुक़ न था आते-जाते रहे।

थोड़ी देर में जमींदारों वाली चारपाई के एक-एक पाये के पास पान-दोहरा खायों की तम्बाकू की पीक से बित्ते-वित्ते भर ज़मीन रंग गई। गाँव में भीट, गाँव के तमोली, कई रोज़ की तैयारी, सैकड़ों की संख्या में लगे पान लौंगदार ले आए। इलायची दोहरा और ज़रदावाली तश्तरियाँ भी दो-तीन। सिपाहियों ने पत्ते चबाने वाले बकरों को मात किया। झूठ के मामले में जमींदारों की चौगुनी फ़ुरती थी।

१४

थानेदार देखते हुए जातीय सभ्यता के अनुसार ऊब कर, लोभ के ढंग से चले, सरकारी आज्ञा की हथेली से सिपाहियों को बुला कर, एक किनारे आपसी बातचीत करने के लिये। यहाँ ऐसे मामलों की तहक़ीक़ात में ज़मींदारों और मुद्दई-मुद्दालों से सिपाही बातचीत करते हैं, लेन-देन करते हैं। कुछ दूर चल कर कान में बतला कर, थानेदार लौट आए और बैठे। एक सिपाही ने यमुना-प्रसाद को और दूसरे ने रामराखन को बुलाया। अलग-अलग दोनों की बातचीत ले कर अलग-अलग थानेदार से कहेंगे। उनके सिवा दूसरे को एक-दूसरे की बातचीत मालूम न होगी। सिपाहियों ने तदनुसार दोनों को बुलाया, दो भिन्न दिशाओं में ले चले और पूछने लगे।

उत्तर तरफ़ यमुनाप्रसाद वाला सिपाही और दक्षिण तरफ रामराखन वाला था।

यमुनाप्रसाद वाले ने एक दफे मूछों पर ताव दे कर यमुनाप्रसाद से पूछा, आपको क्या मालूम है ?

यमुनाप्रसाद ने कहा, हमारी सीढ़ी दूसरे के घर से काम के लिये आई हुई दीवार से लगी थी। रात को वह माधो मिश्र की दीवार से लगी दिखी। माधो मिश्र उस रात बिना सेंध के अपने यहाँ से कुछ रुपये सामान और बरतन उठ जाने का बयान करते थे। आखिर चोरी या डाके के वक्त उन की आँख खुल गयी थी, मगर मारे डर के उन्होंने मुँह नहीं खोला और हिले भी नहीं; पड़े-पड़े देखते रहे। जो सूरत कम-बेश उनकी पहचान में आई उसका बयान यह है कि जवान खासा हट्टा-कट्टा था।

रामराखन वाले ने पूछा, आपको इस मामले का क्या हाल मालूम है ?

रामराखन ने कहा, मिश्र माधवप्रसादजी गाँव के भलेमानुसों के अगुआ अपने ज़मींदार यमुनाप्रसाद के साथ हमारे यहाँ तड़के आए और हाल बयान किया कि रात को ताला तोड़ कर उनके घर चोरी हुई है। पिछली रात को पैर की आहट से या सामान की खनक से उनकी आँख खुल गयी, वह मारे डर के चारपाई से उठे नहीं पड़े-पड़े ताकते रहे। जो सूरत उन्हों ने बयान की वह यह है कि एक गठा जवान अँधेरे में लगी सीढ़ी से चढ़ता नज़र आया। चढ़ कर उसने सीढ़ी चढ़ा ली। सुन कर हमने थाने में रपोट कर आने के लिए कहा और शक में किसी का या किन्हीं के नाम

लेना चाहें तो लिखा दें, यह सलाह दी। अब सरकार की तहक़ीक़ात है ।

दोनों सिपाही अलग-अलग खड़े रहे। थानेदार ने दोनों से अलग अलग मिल कर बातें की और कार्रवाई समझाई। सिपाहियों ने फिर दोनों ज़मींदारों को बुलाया और रामराखन से उसी तरह यमुनाप्रसाद के पीछे लग कर जाने और क्या बातचीत होती है कहने के लिए कहा। यही आज्ञा यमुनाप्रसाद को हुई। दोनों ने पहलवान को बुलाया ।

पहलवान रामसिंह ने काँपते गले से कुछ कहा, आए और मजबूरन काँपते हुए पैर रखते हुए एक बग़ल खड़े दोनों ज़मींदारों से मिलने गये।

यमुनाप्रसाद ने पहले की तरह पहलवान से कहा, हम कहते थे कि सर आएगा। वही हो कर रहा। इल्लत लग जाती है, तो ऐसे नहीं छूटती, कुछ खर्च दीजिए या अपनी जान पर खेलिये। अब सामने आया ।

ज़मींदार रामराखन की ओर उँगली उठा कर पहलवान से उन्होंने कहा, हमारी आप की बातचीत के यह गवाह है। इकार जाइयेगा तो भुगतना होगा।

पहलवान के होश फ़ाख्ता हो गये। झूठी जूड़ी चौगुनी बढ़ी। थानेदार निर्विकार चित्त से देखते रहे। सिपाही अपनी-अपनी जगह तम्बाकू और पान थूकते रहे ।

पहलवान ने कई दफ़े अपने निश्छल हृदय का परिचय देना चाहा मगर हुमस-हुमस कर रह गये। सरकारी मजबूरी छाती पर तिपाये की तरह बराबर ज़मीं पर जैसे जम कर बैठी थी, धार्मिक प्रतिक्रिया छाती के निचले हिस्से में। हाथ मला किये, काँपा किये, हुमस-हुमस कर रहा किये, आँसू लाने की कोशिश करती आँखों को देखा किये।

कुछ कहो नहीं, तो जाते हैं—यमुनाप्रसाद ने आवाज़ ऊँची करके कहा।

पहलवान डगमगा कर रह गये।

रामराखन ने हिम्मत बँधाई। यमुनाप्रसाद से कहा, आओ उधर के लोगों से बातचीत कर लें।

अपने साथ रामराखन कई और मझोले नये आदमियों को ले आये थे अपने दबाव से। थानेदार की तरफ़दारी के बिना उनसे रुपये वसूल न होंगे, इस ख्याल से उनके पास चले। साथ यमुना गवाह की तरह गये। रामराखन की तरफ़ से यह सबूत है कि वह अपनी तरफ़ से मित्र ग्रामवासियों से रुपये नहीं वसूल कर रहे हैं, ग्रामवासियों की बचत के लिये ही ये रुपये लिए जा रहे हैं, नहीं तो थानेदार खुश नही होते, उनसे बैर होता है, जिसका झोंका पहले ज़मींदार के घर आता है। इनमें रामसुख, शिवलाल दो मुख्य हैं। अलग-अलग हर एक से जमींदार ने यह कहा कि चोरी की शनाख्त में वे पुलिस की निगाह में आते हैं, उन का

क्या कहना है। गिड़गिड़ा कर, समझाये जाने पर, हर एक ने अपनी इज़्ज़त के बचाव के लिये दस-दस रुपये देना मंजूर किया। रामराखन के लिए यह तारीफ़ वाली बात हुई कि उनके आदमियों से थानेदार को बीस रुपये की आमदनी हुई, जिसमें दो रुपये कम से कम उनके हैं।

दोनों ने चल कर अपनी-अपनी बातें कहीं। सिपाहियों से थानेदार ने सुना, शनाख्त वाले असली आदमी के अलावा ग़ैर आदमियों से बीस रुपये रामराखन की मार्फत मिले।

यमुनाप्रसाद ढीले हुए भी, सरकार की फ़र्मावरदारी के बल से कड़े रहे।

मिश्रजी का अभी समय न आया था। थानेदार ने समझाने के लिए कहा, पहलवान की निगरानी खुलवाई जायगी इसलिए बदमाशी लगाई जानेवाली है; पुलिस मुद्दई होने पर मदद न पहुँचेगी, सज़ा हो जायगी।

यमुनाप्रसाद सिपाही से सुन कर पहलवान के पास फिर गये।

एक दफा ठण्डे होने, सोचने-समझने का मौका पा कर पहलवान ने दूसरे दफ़े भी आवाज़ लगाई।

मिश्रजी से पूछने का हुक्म हुआ। मिश्रजी ने रपोट के रुपये दे दिए थे। दिल कड़ा था। बहुत नीचा न देखने की हिम्मत बाँधे हुए थे, व्यक्ति के विचार से मुंशी के खिलाफ़ भी हो चुके थे। चौकीदार पर भरोसा था कि गाँव का विचार रखेगा। इज्ज़त के

ख्याल से बयान बदल दिये । कहा एक लम्बा-लम्बा दुबला-पतला आदमी था, भीतर सीढ़ी लगा कर उतरा । मुंडेरी पर एक आदमी खड़ा था उसको समान उठा कर देता रहा होगा, जब हमारी आँख खुली और हम हिले, चढ़कर मुडेरी पर हो रहा और सीढ़ी चढ़ा कर बाहरी तरफ लगा ली, फिर एक रहे, दो या और उतर गये। हम अलसाये हुए, कुछ न समझे हुए, आहट से उठे और दिया जलाने को हुए, तब तक यह सब हो गया । दिया जला कर हमने देखा तो कोठरी का ताला टूटा था और चार पेटियाँ और कुछ बासन ग़ायब थे । दरवाज़ा खोल कर आवाज़ लगाई और बाहर देखा तो सीढ़ी लगी थी । रात साढ़े तीन का वक़्त रहा होगा ।

थानेदार ने उसी तरह सुना । निगरानी-शुदह पासी के साथ पहलवान के आने की गवाहियाँ उसी तरह ली गईं और पहलवान से फिर उसी तरह पूछने के लिये कहा गया ।

यमुनाप्रसाद को इतना ही बल था कि गवाहियों की व्यवस्था कर रखी थी ।

पहलवान के पास फिर गये और पूछा और खुल कर कहा भी कि अगर पुलिस को खुश नहीं करते तो बँधते हैं यानी बदमाशी लगाई जाती है, सज़ा की भी नौबत आ सकती है । कहीं माल बरामद हुआ, जब कि पुलिस जहाँ चाहेगी तलाशी लेगी, तो ईश्वर के बचाये भी नहीं बचते । पहलवान ने एक दफ़े मिश्रजी की तरफ़ देखा । मिश्रजी को भी मददगार चाहिये था, एक पानी दिखा

चुके थे, यहाँ अपने बयान में पहलवान की पीठ भी बचाई थी, गर्दन कड़ी करके उन की तरफ़ देख कर इशारा किया।

पहलवान ने जूड़ी में जैसे काँप कर कहा, भई जब पीछे पड़ गये तब दस रुपये तक कहो तो बाज़ आयें; नहीं तो सेंत-मेंत की बला है, आप गाँव के ज़मींदार हैं, जानते हैं कि बेक़सूर की मदद होनी चाहिये, बिना कारण गला फँस रहा है।

यमुनाप्रसाद ने कहा, दस रुपये से काम न चलेगा। जब मामला लड़ गया है बचाव कठिन है। देर करना ठीक नहीं है। क़ाफ़ी सोच-विचार चुके। कबूलो या अख़ीर है कह दें।

पहलवान ने कहा, दस और दे सकते हैं, बस !

यनुनाप्रसाद का चार सौ का अन्दाज़ा बीस में आया। चढ़ी पैंग घट गई।

सिपाही से चल कर कहा कि बीस रुपया देना चाहता है।

सिपाही ने थानेदार से जा कर कहा।

थानेदार ने कहा बेलज्ज़त है।

सिपाही ने कहा, माल बरामद नहीं कुछ रोज़ तक तहक़ीकत कर लीजिए, फिर बाँधिए, फिर जैसी हुज़ूर की मर्ज़ी।

थानेदार ने कहा, हाँ बदमाश की तरफ़ के भी गवाह होने चाहिये।

नाश्ते का हिसाब था। उस रोज़ थानेदार चले गये।

★

१५

मनोहर बम्बई न जा कर काशी आया। गाड़ी से उतरकर स्टेशन पर एक पुस्तिका खरीदी जो काशी पर थी। टिकट दे कर स्टेशन से बाहर निकला और पुल के नीचे राजघाट पर चल कर बैठा। गंगा और किनारे की उजड़ी हुई पुरानी बस्ती देखता रहा। इक्के दुक्के लोग आते-जाते रहे। पूछने पर उस को मालूम हुआ, पुरानी काशी वरुणा की तरफ और थी। किसी-किसी ने कहा, वरुणा के किनारे तक थी और वरुणा के किनारे-किनारे इस तरफ़ बीच में गंगा के किनारे कुछ आगे क़िला पड़ता है। अस्सी की तरफ जहाँ आबादी है, वन था। मुग़ल-कालीन काशी अस्सी नाले तक थी। तुलसीदास जी का स्थान उसी जगह है। राजघाट के नीचे का हिस्सा हिन्दू-कालीन पुराना है। बहुत-सी चीज़ें खोदने पर मिलती हैं। मनोहर डेढ़ घंटे तक बैठा रहा। काशी वाली किताब

पढ़ डाली। लोगों से भी जानकारी प्राप्त की। सभों के पते लगाए। संस्कृत की पढ़ाई के बारे में भी पूछा कि क्या-क्या प्रबंध है। फिर स्नान करके धोती सुखाई। फिर जलपान किया और शहर की तरफ़ चला।

दो-तीन रोज़ तक घूमता-पूछता सुविधायें देखता रहा। धनिकजनों और राजों-महाराजों के दिये दान और विद्या के प्रबन्ध की जाँच करता रहा। स्वभाव में जो जलन थी उसकी लपटों में जलाने का अन्वेषण प्रबल था। संस्कृत वह इतनी जानता था कि काशी में सम्मान की सर्वत्र उसको सुविधा हो। मगर जिस परिस्थिति का वह मुक़ाबिला कर रहा था उसका मित्र उसको कहीं नहीं मिला। द्विजों के शूद्रत्व से उस का रोआँ-रोआँ लपट की जीभ हो रहा था। उन को जलाने या जाति में नई जान फूँकने की सहूलियत उस को उन सभों और पाठशालाओं से नहीं हुई। इतर-जनों में भी प्राचीन भावना थी। अगर कहीं अँग्रेज़ी राज के कारण हुमसते थे, तो उनका हाथ पकड़ कर रास्ते पर ले चलनेवाला न था। जाति का कोई व्यक्ति संस्कार करनेवाला चाहिये वह समझा। स्कूली विद्या और सरकारी नौकरी से अपने पाये नहीं पुख्ता होते। वही रास्ता चालू रहता है जो गुलामी वाला है। उसने छिप कर काम करने की ठानी। उसको विश्वास था कि संस्कार के साथ शास्त्री तक वह बीस आदमियों को ले चल सकता है, जो ब्राह्मणेतर कहे जाते हैं। अपनी जातीय मर्यादा

शास्त्रानुकूल द्विजत्ववाली वे आप ले लेंगे, उसको विश्वास था। वहीं वह जम गया और भूमि की खोज करने लगा। उसके पास बम्बई तक के लिए जितना खर्च था, उससे वह एक मास तक सादगी से काशी में रह सकता था। घर की चिन्ता अविवाहित युवक को न थी। घर का मुँह वह मर्यादित हो कर ही देखेगा।

उसने देखा काशी सभी प्रकार के मनुष्यों की आवादी है। मन्दिरों, मठों और राजभवनों के अलावा उसके चार-पाँच मुख्य विभाग किये जा सकते हैं। उसी भू-भाग के रहने वाले लोग मुख्य हैं। ईसाइयों के अलावा मुसलमान, बंगाली, गुजराती, मराठे अपने-अपने निवास वनाये हुए हैं। काम स्थानीय जनों में ही सम्भव है। उसका विरोध द्विजों द्वारा अवश्य होगा। मगर स्थानीय जिन वैश्यों तक संस्कृत की प्रथा थी उनके दायरे से कुछ उतर कर उसने हिसाव बाँधा। जो जातियाँ प्रजा के रूप में शूद्र कही जाती थीं उनको उसने वैश्य के रूप में समझा, दिल से ब्राह्मण से भी उच्च। जिस प्रचलन के घाव उसको लगे थे, उससे वचाव का यही रूप उसने निकाला। एक जगह जम कर घूम-घूम कर हाल मालूम करता रहा। धनिक शूद्र काशी में वहुत थे।

एक हफ्ते के अन्दर उसने उनमें नई जान डाल दी। संस्कृत की पढ़ाई से उनका सामाजिक क्रम ऊँचा उठेगा, उनकी समझ में आया। जो लड़के स्कूल नहीं जाते थे उनको उसने अपनी पाठशाला में लिया। जो स्कूल और कालेज में संस्कृत लिये हुए थे उनको वेतन

ले कर पढ़ाने का प्रवन्ध किया। फ़ायदा वह सुझाया कि एक पठित ब्राह्मण उनके सामाजिक क्रम को उठाने का सहायक है, उनके घर की पकी साग-पूड़ी खुल्लम-खुल्ला खायेगा; इस सुविधा को वह गाँठ बाँधे रहेंगे और आवश्यकता पड़ने पर प्रमाण के रूप में पेश करेंगे; मगर जब तक खासी तैयारी न हो जाय तब तक यह भेद न खोलें, क्योंकि वह अकेला बहुसंख्यक ब्राह्मणों से अकारण विरोध न करेगा। लोग उसकी बात से बहुत प्रसन्न हुए। वह तुल गया था, उनके इम्तहान में कटा नहीं। काम शुरू हो गया।

★

१६

मनोहर उषाकाल उठ कर निवृत्त हो कर दशाश्वमेध में गंगा स्नान करके विश्वनाथ जी के दर्शन करता था, फिर लौट कर लड़कों को पढ़ाता था। दुपहर को भोजन-पान के पश्चात दो घंटे विश्राम करता था, फिर आखीर आचार्य-परीक्षा की पढ़ाई में लगता था। रात को स्कूल-कालेज के लड़कों को उन के घर चल कर पढ़ा आता था। दुपहर का बनाया भोजन रखा रहता था, दस ग्यारह बजे रात को फुरसत पा कर करता और सो जाता था। इस प्रकार कई महीने पार कर दिये। लोग उसकी तल्लीनता और परिश्रम से प्रसन्न थे। प्रायः उस की पूड़ियों की दावत करते थे। इस प्रकार जीवन का पौधा लहलहाने लगा। लोगों में काना-फूसी शुरू हो गयी, मगर अभी तक चढ़ाई न हुई थी। ब्राह्मण सुन कर कसमसा कर रह जाते थे। उनके समर्थक क्षत्रिय

और वैश्य सुन लेते थे, पराधीनता की दोहाई दे कर रह जाते थे। इस प्रकार छः महीने और पूरे हुए। मनोहर आचार्य-परीक्षा के इम्तहान में बैठा और प्रथम हो कर पास हुआ। इससे उसके सहकारियों में आनन्द का दूसरा तूफान उठा। वे उसके पीछे जानो-माल खपाने को तैयार हो गये। उसकी तारीफ़ अब बनारस के इतर-जनों के घर-घर थी। ब्राह्मण के नाम से वही माना जाने लगा। वहाँ के लोग, खासतौर से ब्राह्मण और जगे; परन्तु दान-दक्षिणा के खाते में उसका नाम न होने के कारण, उसकी तारीफ़ सुन कर अवज्ञता से मुँह फेर लेते थे, कहते भी थे—हमारे यहाँ उस की कोई मान्यता नहीं, न उसकी पाठशाला कोई पाठशाला समझी जाती है।

बनारस में मनोहर इस प्रकार छिप गया कि घरवालों को डेढ़ साल हो जाने पर भी कोई पता न चला। उसने एक भी पत्र नहीं लिखा। जी कर भी जैसे मर गया हो। संस्कृत का आचार्य हो कर वह दूसरे विषयों की तरफ मुड़ा। अंग्रेजी भी सीखने लगा। स्वस्थ था, परिश्रम सफल हो चला। उसके छात्र टूटी-फूटी संस्कृत में बातचीत करने लगे। घरवालों का कौतूहल बढ़ चला। इस समय काशी में ज़ोरों से लोग क्रिश्चियन बन रहे थे। इस की पाठशाला की इसी डाट के कारण ज्यादा मुखालिफ़त नहीं हुई। वह खुद अपना काट सोचे और लिए रहता था, लोगों को समझाया भी करता था। काशी के धनिक वैश्य जो ब्राह्मणत्व के हक़दार

थे, भीतर से शूद्रों के संस्कृत पठन के समर्थक थे। मनोहर अब तक इतनी तैयारी कर चुका था कि इन लोगों को शूद्रत्व के आवरण से पृथक कर देने में प्रमाण-प्रयोगों द्वारा समर्थ हो जाय। लोग उसकी इज्ज़त करने लगे कि उस को देख कर खड़े हो जाते थे और हाथ जोड़ कर नमस्कार करते थे। कुछ प्रथाएँ भी उन लोगों ने अपने बीच में चला ली थीं। उनकी प्राचीन प्रथा द्विजों से मिलते वक़्त दूसरी थी। मनोहर को इन सब का ज्ञान हो गया।

काशी में बहुत तरह के लोग रहते हैं। सभी का उद्देश्य पुण्य-सञ्चय है। पुण्य के प्रकार बहुत से हैं। रानी विमला का नाम उनमें एक वैसा ही है जैसा मनोहर का। रानी साहिबा अब तक भारत की काफ़ी खाक़ छान चुकी हैं। अभी उम्र सिर्फ़ पचीस साल की है, मगर विधवा हैं; पति शराब-खोरी से नष्ट-स्वास्थ्य हो कर गुज़र चुके हैं। सरकारी बन्धुत्व का रानी साहिबा पर अत्यधिक आक्रमण हो चुका है। वैधव्य की बाधा स्वल्पकाल के लिये भी नहीं मानी गई। उन्होंने अपने कहार से सुना कि एक पण्डित इस प्रकार का काम कर रहे हैं। इससे उनका मन ऊँचा उठा। प्राचीन प्रथा से उनकी रक्षा नहीं हुई, इस नवीनता के जागरण में काम करने के लिये गुप्त रूप से उन्होंने हाथ बढ़ाया, अर्थात् एक दिन मनोहर से मिलने के लिये कहा। खबर पा कर मनोहर ने मिलने का अपना रास्ता निकाला; कहा—नहाते वक्त दशाश्वमेध घाट पर बात-चीत

हो सकती है, अभी खुल कर मिलने में बहुत तरह की आपत्तियाँ हो सकती हैं, जिनका प्रतिरोध किसी पक्ष के द्वारा नहीं हो सकता। सम्वाद सुन कर रानी साहिबा सहमत हुईं और रात चार बजे जब इक्के-दुक्के आदमी ही नहाने के लिये जाते हैं, साधारण वेश से स्नानार्थिनी की तरह उससे मिलने के लिये कहा। दिन निश्चित हो गया। कहार रानी साहिबा को ले कर आया। मनोहर रास्ते पर मिला।

रानी साहिबा ने हाथ जोड़ कर नमस्कार किया। मनोहर ने भी किया। बत्ती के प्रकाश में रानी साहिबा ने देखा, दिव्य युवक है। कहा, हम आपकी तारीफ़ सुन चुके हैं। यह लीजिये, कह कर रूमाल में बँधी हुई एक रक़म मनोहर को दी। हाथ बढ़ा कर मनोहर ने ले लिया। रानी साहिबा ने कहा, अपने काम के लिये, अपनी सहायता के लिए खर्च कीजियेगा। हमारा पता आप को मालूम है। इसी माध्यम से सहायता के लिये कहियेगा। हम अपने हाथ आप को अर्थ देते रहेंगे। देश के युवक, अब हम वह नहीं हैं, मगर देश की भलाई के लिए तुम्हारे साथ हैं। हमारी जो तौहीन होती है, उसके निराकरण के लिये कम से कम हज़ार युवक तैयार कर दो।

मनोहर को जैसे साक्षात् अन्नपूर्णा मिलीं। उसने हाथ जोड़ नमस्कार किया। कहा, मुझ को आज तक ऐसा दान नहीं मिला, ऐसी दात्री मैंने आज तक नहीं देखी।

★

१७

मिश्रजी मुंशी के खिलाफ़ दरख्वास्त दे चुके थे। गाँव में दल बाँधना शुरू किया। पहलवान के खिलाफ़ उन की गवाही नहीं थी। यह ज़मींदारों को बुरा लगा। रिश्तेदारी और मान्यता के के कारण सर उठा कर वे उनके खिलाफ़ कुछ कह नहीं सकते थे, लिहाज़ा आमदनी में जो रिश्वत से होनेवाली थी फ़र्क आया। चौकीदार भी मिश्रजी के साथ था। कुछ लोग और बँधे। रामसिंह ने अपने लोगों में पैरवी करने की दौड़ लगाई। मनोहर के गाँव भी गये। थाने में चारों तरफ से सिफारिशें सच हालात के साथ पहुँचने लगीं। थानेदार सुनते और खिलते गये। बिना सेंध की चोरी थी, इसलिये बड़ा महत्त्व उस को नहीं दिया; उलटे मिश्रजी पर निगाह डटाई। तब तक मुंशी के खिलाफ़ कप्तान के यहाँ से तहकीकात हो गई। मामले को सच समझा हो या झूठ,

मुंशी का बहरहाल तबादला हो गया। बरखास्त होते-होते बचे, यह उन्होंने अपना सौभाग्य समझा। बड़ा बदमाश हलका है कह कर बोरिया-बधना समेट कर विदा हुए। मिश्रजी को खबर हुई कि मुंशी बदल गये। थाने का हाल अदालतवाले लोग बाज़ार आते-जाते लेते रहते हैं। मिश्रजी ने निश्चय किया कि अब फंदा मज़बूत डाला जायगा, बचाव किये रहना चाहिये। जिले में उन्होंने वकील को डायरी लिखा दी कि यह-यह हुआ। गाँव में बातचीत बढ़ी कि अब मिश्रजी के हाथ गाँव के लोगों की बाग-डोर है। सामाजिक फ़ैसले आदि के वह मुखिया माने जाने लगे। आमदनी भी बढ़ी। ज़मींदारों से कम लगान पर चार बीघे खेत और मिले। वह समझते थे, दिन-दूने रात-चौगुने बढ़ते पाप का पर्दा यह फ़ाश करेगा, तो बाप-दादों की जोड़ी माया महीने भर में बह जायगी। इन खेतों से भी अगर ज़मींदारोंवाली इज्ज़त बरकरार रहे, तो भली। थानेदार तब तक माल की जाँच करते रहे। गये हुए सामान की फ़िहरिस्त उनके पास थी। उन्होंने चौकीदार से ले ली थी।

जिस तरह चोरी का न होना एक सरकार का धर्म है, उसी तरह चोरी का होना भी उसका धर्म कहा जा सकता है, जब कि लोगों की माली हालत के सुधार का तरीका ही उलटा है, ज़मींदारों के बड़प्पन की साख चलती है, विलायत की नोबिलिटी का देश पर सिक्का है। इस तरह, एक थाने में हर रात चोरियाँ होती रहती हैं, कुछ लिखी जाती हैं, कुछ नहीं। इस चोरी के बारे में जो

पहलवान से तअल्लुक़ रखती है, थानेदार को बहुत विश्वास न था, मगर मिश्रजी की पार्टी को वह फँसाना चाहते थे। उन्होंने शिकायत के जवाब में जो रपोट दी थी वह मुंशी के माफ़िक थी और मिश्रजी के खिलाफ़। गाँव के जमींदारों को भी उन्होंने समझाया कि मुंशी का तबादला हुआ, इसके माने यह नहीं कि वह बरखास्त हो गये या सरकार की नजर में गिर गये। अगर रैयत में इतनी गर्मी होगी तो सरकार के मुलाजिम में कितनी हो सकती है। इसका उलटा सबने समझा कि मिश्रजी एक दिन बाँधे जा सकते हैं। जमींदारों को भीतर एक खुशी हुई, मगर दाँव पर चढ़ा नहीं पाते थे। जमीन देने का कारण भलमनसी का बचाव भी रखा था कि उन को अपना तरफ़दार बनाये रहें कि कलई न खोल दें।

इस प्रकार एक अरसा गुज़र गया। पहलवान पहले की तरह बाज़ार आते-जाते रहे, आमदनी बढ़ती रही। उठक-बैठक मिश्रजी के यहाँ बढ़ी और मान्यता भी गाँव में उन्हीं की रही। चौकीदार भी आता-जाता रहा और लोग भी आने-जाने लगे। जिनके दरवाज़े बैठने-बिठाने के लिये चारपाई न पड़ती थी, उनके वहाँ पड़ने लगी। यदा-कदा ज़मींदारों का भी शुभागमन होने लगा। किसी को पता नहीं चला कि मिश्रजी ने क्या किया कि मुंशी यहाँ से वहाँ हो गये। एक ही हाथ से मिश्रजी ने अपना मैदान साफ़ कर लिया। लोगों के यहाँ से दूध, घी, सब्ज़ी आदि

गाँव की चीज़ें मिश्रजी के यहाँ व्यवहार में अधिक आने लगीं। ज़मींदारों से इस तरह की शिकायतें थानेदार सुनते रहे, मगर अब तक काँपा न लगा था। चोरियों के सामान में जो चीज़ें बरामद हुईं, उन को अभी तक निश्चयपूर्वक थानेदार मिश्रजी की चीज़ें नहीं कह सके थे। इस ताक में थे कि एक अरसे के बाद उन को पहचनवायेंगे।

★

१८

इस प्रकार एक साल से अधिक बीत गया। मिश्रजी तथा लोगों ने निश्चय किया कि शिकायत रफ़ा हो गई। थाने का हिसाव मिश्रजी को मालूम था। वह जानते थे, दूव की जड़ बारह साल तक सूख कर मिट्टी और पानी के लगते जिस तरह हरी हो उठती है उसी तरह सरकार की निगाह पर चढ़ा आदमी ज़िन्दगी के आख़ीर दम तक याद किया जाता है। सरकार और ज़मींदार का जो साथ है उसके बीच में आ गये हैं। इसका कारण ब्राह्मणत्व का एक दूसरा बड़प्पन है। इस को छोड़ कर भी वह साँस नहीं ले सकते। इतनी मान्यताओं के बाद आदमी का जीना मुहाल हो जाता है। तैयारी किये रहना चाहिये, जो कुछ होगा, भोग लिया जायगा। इस बल पर मिश्रजी बढ़ते गये।

हलके में थानेदार की निगाह गवर्नर की निगाह से बड़ी मान्यता रखती है। थानेदार बदले मगर इस मामले की याद

दिला गये। दूसरे थानेदार हसन खाँ ने मामले को समझ लिया, सरकारी लोगों की गवाहियाँ ले लीं, चार्ज लगाने की पेशबन्दी की। ज़मींदारों से इच्छानुसार रपोर्टें लेते रहे। चार्जशीट तैयार करते रहे। एक रोज़ चौकीदार ने मिश्रजी से कहा, माल की पहचान करनी है। जो माल बरामद हुआ है उसमें आप की लिखाई चीजें भी हैं। चलिये थाने में पहचान कर बताइये। मिश्रजी ने कहा—हाँ, चलेंगे। स्नान-भोजन करके दो-तीन मित्रों को ले कर देवी जी की जय करते हुए चले। जानते थे, जाल है। अपना सामान गया ही नहीं, पहचान किस की ? घबराये कि अब फँसाये जायेंगे। गवर्नमेंट को मानते ही थे, व्यक्तिगत राग-द्वेष था। थाने चल कर कमर तक झुक कर थानेदार को सलाम किया। थानेदार से चौकीदार ने परिचय दिया। थानेदार कुछ न बोले। मिश्रजी आँखें और मनोभाव पढ़ते रहे। बहुत माफ़िक नहीं देखा। बरामद शुदा चीजें न थीं, दूसरी जगह से लाई गईं थीं। सामने ला कर रखी गईं। तीन का समय था। मिश्रजी एक-एक देखते रहे। चीज़ें ऐसी न थीं, जो शिनाख्त में न आयें जैसे रुपये-पैसे, सोने-चाँदी की ईंटें या कच्ची चाँदी। जेवर और कपड़े वह देखते फिरे। दिल में सोचा अगर नहीं कहते हैं तो बात नहीं बनती। गोल-गोल कहते हैं तो बचाव की जगह रहती है, मगर दूसरे गाहक आ सकते हैं या तैयार किये जा सकते हैं। अगर कहते हैं कि चीज़ें वही हैं तो

मामला लड़ जायगा। खुद-ब-खुद थानेदार को जिनसें ज़िले की अदालत में भेजनी पड़ेगी। अभी अगर कोई झोल या कोई पोल है तो वहाँ खुलेगी, थानेदार के हाथ से यह मामला निकल जायगा। अदालत में हाकिम के यहाँ होगा। यह भी सोचा कि जो सरकार यहाँ है वह वहाँ भी है; हमको थोड़ी-सी जगह नहीं से मिल सकती है।

मिश्रजी ने कहा, जेवर वग़ैरह वैसे ही जान पड़ते हैं। इनकी पहनने वालियाँ भी हैं। पहचान उन्हीं की पक्की होगी, इसलिये मामला ज़िले में ही फ़ैसला पा सकता है। वहाँ उन लोगों को हम पहचानने के लिये ले जा सकते हैं।

थानेदार ने कहा, मगर कोई चीज़ आप की है, यह कहने ही से आप की नहीं हो जायगी। इसकी भी जाँच-पड़ताल है। सरकार दूध का दूध और पानी का पानी निकाल कर छोड़ेगी।

मिश्रजी ने कहा, क्या यह देख नहीं रहे, सरकार बाघ और बकरी को एक ही घाट पानी पिलाती है।

थानेदार ने कहा, इनमें जो-जो चीज़ें आप की हों, उठा कर लिखा दीजिये।

मिश्रजी ने जेब से फ़िहरिस्त की नक़ल निकाली और देखते हुये पाँच अददें थानेदार के पास ले गये, कहा, यह अददें हमारी फ़िहरिस्त में दर्ज हैं।

*

१६

थानेदार को फँसाना था, इसलिए ज़मींदार से लिया माल ज़िले चालान कर दिया। हाकिम से मिल कर कुल बातें समझा दीं कि जिस तरह की कार्रवाई हो रही है इससे गाँव बिगड़ रहा है; सरकार का पाया उखड़ जाता है; लोग ज़मींदार और सरकार के मातहत नहीं रह जाते; वे मामले को व्यक्तिवादी बना देते हैं। चोरी से ले कर अब तक की तहकीक़ात का हाल थानेदार ने समझाया। शहादत के लिये कहा। प्रार्थना की कि मिश्र बदमाश आदमी है; इसने सरकार के मुलाज़िम के खिलाफ़ दरखास्तें दी हैं और लोगों को फँसाये रहता है, जिससे पुलिस को कार्रवाई में अड़चन पड़ती है। माल असली चोरी का नहीं, ज़मींदार से लिया गया है। कुछ चीजों को यह अपनी बताता है। यहाँ मकुनी अदालत में हाकिम को इनके रवैइये का

अन्दाज़ा हो जायगा; फिर हुक्म के मुताबिक कार्रवाई की जायगी। शाहादत की तारीख ले कर थानेदार चले गये। माल थाने में जमा रहा।

तारीख के रोज़ मामला समझाने के लिये गाँव के ज़मींदारों और गवाहों को ले कर गये। मनोहर के गाँव के भी ज़मींदार और पासी थे। पड़ोस के प्रतिष्ठित कहे जानेवाले प्रायः सभी लोग। इस तरह फाँसा कि थाने के हलके में कहीं भी मदद न मिले। बाहिरी लोगों को समझा दिया, सरकार के बाग़ी लोगों की किसी तरह की मदद न की जाय। पहले मामला शुरू हुआ, फिर गवाहियाँ गुज़रीं। हाकिम ने सुन लिया, फिर असामियों की तारीख ली।

अपने लोगों को समझा दिया कि किसी के कान यह बात न पड़े। सब लोग सरकार के दुश्मन को समझे रहें।

थाने से मिश्रजी को उनके परिवार के साथ शनाख्त के लिये तारीख बता दी। पहलवान को भी बुलाया।

मिश्रजी को बुलानेवाला एक सिपाही था। चौकीदार का नाम न था। मिश्रजी को इतना ही खटका। उन्होंने चौकीदार से आरज़ू-मिन्नत की। वह चलने के लिये तैयार हो गया। ऊँचे ब्राह्मण से वह विनम्रता ही चाहता था।

ज़िले में वकील की मार्फ़त मिश्रजी मिले। पहले से रिपोर्ट लिखाये हुए थे। दरख्वास्तों का ज़िक्र वकील के यहाँ

था। चौकीदार की व्यक्तिगत गवाही वक़ील ने ले ली। और-और लोगों से भीं पूछ-ताछ की। मामला ज़ोरदार था, वकील को हिम्मत हुई। माल की पहचान के लिये मिश्रजी की औरतें सिखाई-पढ़ाई ही थीं। उन्होंने उन्हीं जेवरों को उठाया और कहा हमारी-जैसी हैं।

हाकिम ने अलग वकील को समझा दिया कि यह आदमी सरकार के ख़िलाफ़ चलता है और लोगों को उभाड़ता है। जो सरकारी तरीक़ा है उसको बदल रहा है। चालाक है इसमें शक़ नहीं। इसके घर की औरतें भी चालाक हैं। मगर सरकार का काम अपने ही रास्ते पर होगा। आप अदालत के सर न हों, नहीं तो वकालतनामा ज़ब्त किया जायगा। इतनी आज़ादी एक मामूली रियाया को नहीं दी जा सकती। आप अपने तौर से समझा दीजिये बाज़ू बचा कर।

वकील ने वैसा ही किया। कहा, हम अपनी ताकत भर लड़े लेकिन हाकिम थानेदार का तरफ़दार है। अगर वह चीज़ें आप ही की हैं तो आप ज़ोर दे कर कहिए। दुफ़सली बातें न कीजिए। अ़दालत को शक होता है। वकील भी कमजोर पड़ता है।

मिश्रजी ने कहा कि हम ज़ोर दे कर नहीं कह सकते। थानेदार की जो मर्ज़ी हो करे। सरकार को मानते हैं, मगर सरकार के मुलाज़िम की गैरकानूनी कार्रवाइयों को भी मानना पड़ेगा, यह हमसे न होगा।

☆

२०

कई रोज़ बीत गये। गाँव में तहलका मचा हुआ था। लोग कानों में बतला रहे थे। मिश्रजी के यहाँ आने-जाने वाले लोगों की हिम्मत पस्त थी। सारा वायुमंडल दहशत खाये हुए था। किसी को कुछ मालूम न था क्या होनेवाला है, सब अपना-अपना अन्दाज़ा लड़ा रहे थे। कोई कह रहा था, बग़ावत की जगह, ज़मींदार और थानेदार से कुछ कह देने के सबब, मिश्रजी को सज़ा होनेवाली है। उनके दरवाज़े, कहा जाता है कि बदमाशों की बैठक लगती है, जो रैयत को ज़मींदार के खिलाफ़ भड़काते हैं। बाग़, पनघट, घर, गली, कूचा, खेत-खलिहान सब जगह ऐसी ही बातों का तूमार बँध रहा था।

रात पार हो चुकी थी। सूरज की किरणें नहीं फूटी थीं। चिड़ियाँ डालों पर प्रभाती गा रही थीं। इक्की-दुक्की औरतें

बाहर निकलने लगी थीं। तीन सिपाहियों के साथ थानेदार आये और पहलवान के दरवाजे आवाज़ लगवाई। पहलवान निकले। सिपाहियों ने बाँध लिया और उन का चालान कर लिया। गाँव भर में सनसनी फैल गयी। घर में रोना-पीटना पड़ गया। सिपाही पहलवान को ले कर चल दिये। कुछ दूर तक ज़मींदार भी साथ गये। फिर लौट आए। बड़ी हमदर्दी से पहलवान से कहा, हम कहते थे—पहलवान, सरकार की आँख गड़ी है, अभी दो का खर्च है, फिर चार का होगा, इस पर भी बचाव न होगा। घूम-फिर कर ज़मींदार की ही शरण लेनी पड़ेगी।

पहलवान ने कहा, जब तक रोग गले नहीं लगता तब तक वैद्य की बात याद नहीं आती। हम दो-सौ रुपये देने को तैयार हैं।

ज़मींदार ने कहा, चलिए थाने में देखें अगर थानेदार मान जायँ। पहलवान को ढाढ़स हुआ।

ज़मींदार ने थानेदार से कहा, अगर बन्द कर दीजियेगा तो रुपये से हाथ धोना होगा, नहीं तो दो सौ रुपये देने को कहता है। खोल दीजिये, घर से ले आ कर दे जाय।

पहलवान को सिपाही ने खोल दिया, कहा—इन्हीं के रहना।

पहलवान सर लटकाए हुए घर गये, दो सौ रुपये ले आए और ज़मींदार के हाथ में रख दिए।

हिसाब से बँटवारा हो गया। पहलवान अपनी चौपाल में आ कर बैठे।

★

२१

मनोहर के घर के लोग हताश हो गये थे। पहले दो-एक दिन घर न जाने पर घरवालों ने रिश्तेदार ज़मींदार के यहाँ पूछ-ताछ की। ज़मींदार ने ढाढ़स बँधाया। चुपचाप बैठे रहो, कहीं काम से गये होंगे, अपने-आप खबर मिल जायेगी कि खैरियत है। इतने से घरवालों को प्रबोध हो गया। महीने भर इसी भरोसे पर बीता। मनोहर न आया। बम्बई की चिट्ठी आई, उसमें मनोहर का ज़िक्र न था। चिट्ठी के जवाब में घरवालों ने लिखा कि मनोहर एक महीने से लापता है, ज़मींदारों के यहाँ गया था, वे लोग कहते हैं कि किसी काम से गया होगा, अभी तक कोई चिट्ठी नहीं आई। मनोहर के पिता की चिट्ठी मिली। पता लगाने के लिए दस रोज़ के अन्दर वह भी गाँव दाखिल हुए। घर में रोना-पीटना पड़ा। और जब पूरी खबर नहीं मिली कि मनोहर इस

संसार से विदा हो गया है, तब मिलने की आशा फिर बंधी। दूसरे रोज़ मनोहर के पिता अपनी बहन के यहाँ गये। वहाँ पूछने पर मालूम हुआ कि मनोहर उन्हीं के पास से गया है और पचीस रुपये कर्ज़ ले कर। दो महीने के व्याज के साथ वह रुपया अदा कर देना चाहिये। मनोहर के बाप ने स्वीकार कर लिया, मगर पेट ऐंठने लगा कि लड़के-का-लड़का ग़ायब हुआ और उपर से रुपये देने पड़े, ब्याज के साथ। ज़मींदारों ने समझाया, जवान आदमी है, कहीं नौकरी तजवीज़ करता होगा, धीरज रखिये। अपने-आप सँभलकर आ जायगा। यहाँ ज़ोर करने के लिये आया था, मगर दुनिया का रवैया कुछ और है, उसके आने के बाद से पुलिस के कई मामले लड़ गये, इसीलिये भाग गया, नहीं तो बँध गया होता। आप खामोशी से घर बैठिये या अपने काम पर जाइये। मनोहर के पिता घर चले गये। घर में जैसा सुना, कहा। गाँव के ज़मींदार से मिले, आरजू-मिन्नत की। ज़मींदारों ने भी शिकायत की कि मनोहर का मिजाज कुछ चढ़ा-चढ़ा रहता था, दो-एक जगह गये वहाँ बिगाड़ हो गयी।

सारे गाँव में काना-फूसी होने लगी कि मनोहर चला गया लेकिन किसानों में किसी ने उस की निन्दा न की। मनोहर के पिता जिधर से निकलते थे उधर ही वाहवाही होती थी, तुम्हारी मूँछें रख लीं, तुम्हारा सर ऊँचा किया, वह हमारा अपना भैया है, उसको कोई डर नहीं, हम जानते हैं कि लोगों ने उस को

रहने न दिया, लेकिन वह वज्र है जो सर फोड़ कर टूटे, वह हमारी पुकार है, हमारे आँसू से टपक कर भाप बन कर उड़ गया है, कभी खुशी की बारिश लायेगा।

तालाब में सिंघाड़े भरे हुए थे। कहार ताक रहे थे। किनारे एक जगह कुटिया डाल कर रहते थे। एक दीवार हाथ भर की उठा कर चूल्हा बना रखा था, वहाँ रोटी पकाते थे। मनोहर के पिता को देख कर बच्चू कहार बहुत खुश हुआ, सेर भर के क़रीब कच्चे सिंघाड़े ले आया और दे कर कहा, आपके बेटे की तारीफ़ में है, जो हम लोगों को ऊँचा उठाता है, ब्राह्मणों की तरह हमारा सर नहीं फोड़ता।

हरे-भरे बागों की कतार के किनारे से रास्ता था। रन फूली नहीं समा रही थी। इतनी खुशबू किसी इत्र की दूकान में भी नहीं मिलती और ऐसी अच्छी। उसके नीचे से एक चौगड़ा कूदता हुआ दूसरी झाड़ी की तरफ़ चला गया। चिड़ियाँ बसेरे को लौट रहीं थीं। डालों पर चहक रहीं थीं। सूरज सामने अस्त होने को था। मनोहर के पिता घर लौटे।

प्रचारक पॉकेट बुक्स

की बीस पुस्तकों की पहली किस्त

उपन्यास

१.	भाग्यवती	...	श्रद्धाराम फिल्लौरी
२.	काले कारनामे	...	'निराला'
३.	पवित्र पापी	...	नाकक सिंह
४.	पङ्कज	...	गुरुदत्त
५.	लाल पंजा	...	दुर्गा प्रसाद खत्री
६.	एक सड़क : सत्तावन गलियाँ		कमलेश्वर
७.	गवर्नेस	...	हर्षनाथ
८.	मैंडेलीन	...	मुद्राराक्षस
९.	काठ के ताबूत और ज़िन्दा लाशें	...	प्रकाश दीक्षित
१०.	वनमाला	...	'कैफ़'

११.	बिखरे काँटे	...	लीला अवस्थी
१२.	कादम्बरी	...	बाणभट्ट
१३.	समर्पण	...	तुर्गनेव
१४.	नारी एक पहेली	...	मोपासाँ
१५.	कस्तूरी	...	शानी
१६.	क्लीयोपेट्रा	...	एमिल लुडविग

उर्दू शायरी

१७.	इक़बाल की शायरी	...	डॉ० हीरालाल चौपड़ा

कहानी-संग्रह

१८.	नया स्वर	...	मोहनसिंह सेंगर

काम-विज्ञान

१९.	काम-विज्ञान तथा यौन-व्याधियाँ	...	द्वारका प्रसाद, एम. ए.

पाक-शास्त्र

२०.	व्यंजन-वीथिका	...	कुसुम कटारा

प्रत्येक का मूल्य 1/-

(पॉकेट-बुक्स विभाग)

हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय

मानमन्दिर, वाराणसी—१.



'निराला' आधुनिक हिन्दी साहित्य की विभूति हैं। कविता, कहानी, उपन्यास, निबंध, आलोचना आदि साहित्य के विभिन्न अंगों की इन्होंने श्री-वृद्धि की है।

'काले कारनामे' उपन्यास में निराला ने स्वाधीनता-प्राप्ति के पूर्व के ग्रामीण-समाज का चित्रण किया है। इसमें जमींदारों के घात-प्रतिघात, उनका स्वार्थ और कृषकों का अपराजेय पौरुष उभर कर सामने आया है।

